

- शुभा पँवार, चौथी, इंदौर, म.प्र.



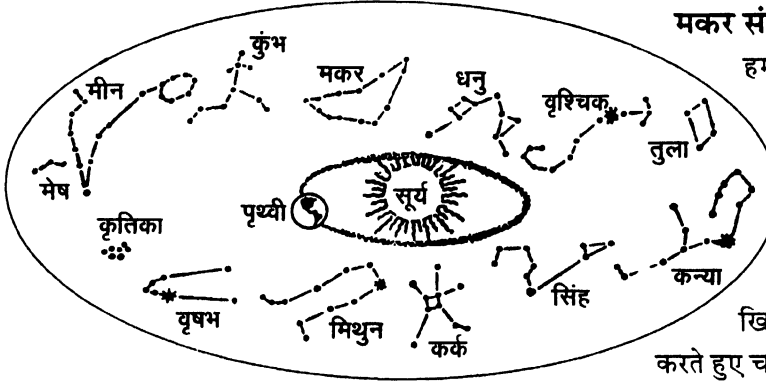
● स्वाति ठाकुर, पाँचवीं, दमोह, म.प्र.

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
के 184 वें अंक में

विशेष

मकर संक्रांति



हम सब मकर संक्रांति के अवसर पर खूब तिल्ली के लड्डू-बर्फी खाते हैं। लेकिन मकर संक्रांति 14 जनवरी को ही क्यों मनाई जाती है? बाकी त्योहारों की तरह इसकी तारीख आगे-पीछे क्यों नहीं खिसकती? इसी सवाल की पड़ताल करते हुए चलो सूरज और पृथ्वी का चाल-ढाल

को कुछ और जानें समझें। पेज 4 पर।

कहानी

14 ☀ नई सुबह

कविताएँ

3 ☀ गेहूँ की बालियाँ

23 ☀ चूँ चूँ चिड़िया

हर बार की तरह

2 ☀ इस बार की बात

9 ☀ मेरा पन्ना

13 ☀ वर्ग पहेली

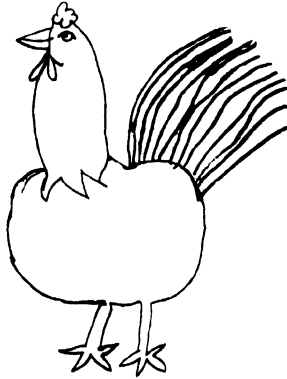
32 ☀ मेरा पन्ना

34 ☀ माथापच्ची

रोचक शृंखला

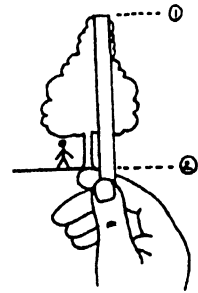
31 ☀ गीत-संगीत : 6

36 ☀ खेल दुनिया भर के : साइक्लिंग



अपनी प्रयोगशाला

में इस बार कुछ पर्यावरण अध्ययन के तरीके सीखेंगे, कुछ मजेदार प्रयोग करेंगे, पेज 24 पर



धारावाहिक

27 ☀ प्यारा कुनबा : 11

और भी बहुत कुछ

18 ☀ सूक्ष्मदर्शी से

24 ☀ अपनी प्रयोगशाला : पर्यावरण अध्ययन

30 ☀ खेल खेल में : प्रकृति संतुलन

● आवरण : चित्र आकाश दर्शन, एमेघर एस्ट्रॉनॉमी और दि इलस्ट्रेटेड रेफरेंस बुक ऑफ दि अर्थ से साभार

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अत्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

एक और नया साल, बल्कि नई सदी की शुरुआत हो गई। लोगों ने खुशियाँ मनाई, मिठाइयाँ खाई, गीत गाए, पटाखे छोड़े, बहुत से नए संकल्प लिए। क्या तुमने भी कुछ नया सोचा है इस नए साल में ?

क्या तुमने कभी इस बात पर गौर किया है कि हम ऐसे मौके क्यों तलाशते हैं जीवन में ? जबकि कुछ नया तो हर रोज़ ही किया जा सकता है। जैसे कोई नई कविता पढ़ना, कोई नया गीत सीखना-गाना-गुनगुनाना, किसी नए रास्ते पर दूर तक सैर के लिए निकल जाना, खूब सारे खूब रंगीन चित्र बना डालना, नए फूलों या चिड़ियाओं को पहचानना, नए दोस्त बनाना। ऐसी बहुत सी छोटी-छोटी चीज़ें, बातें हैं जो बहुत आम होकर भी बहुत नई हो सकती हैं। और ये हमारे रोज़मर्रा के कामों जैसे मंजन



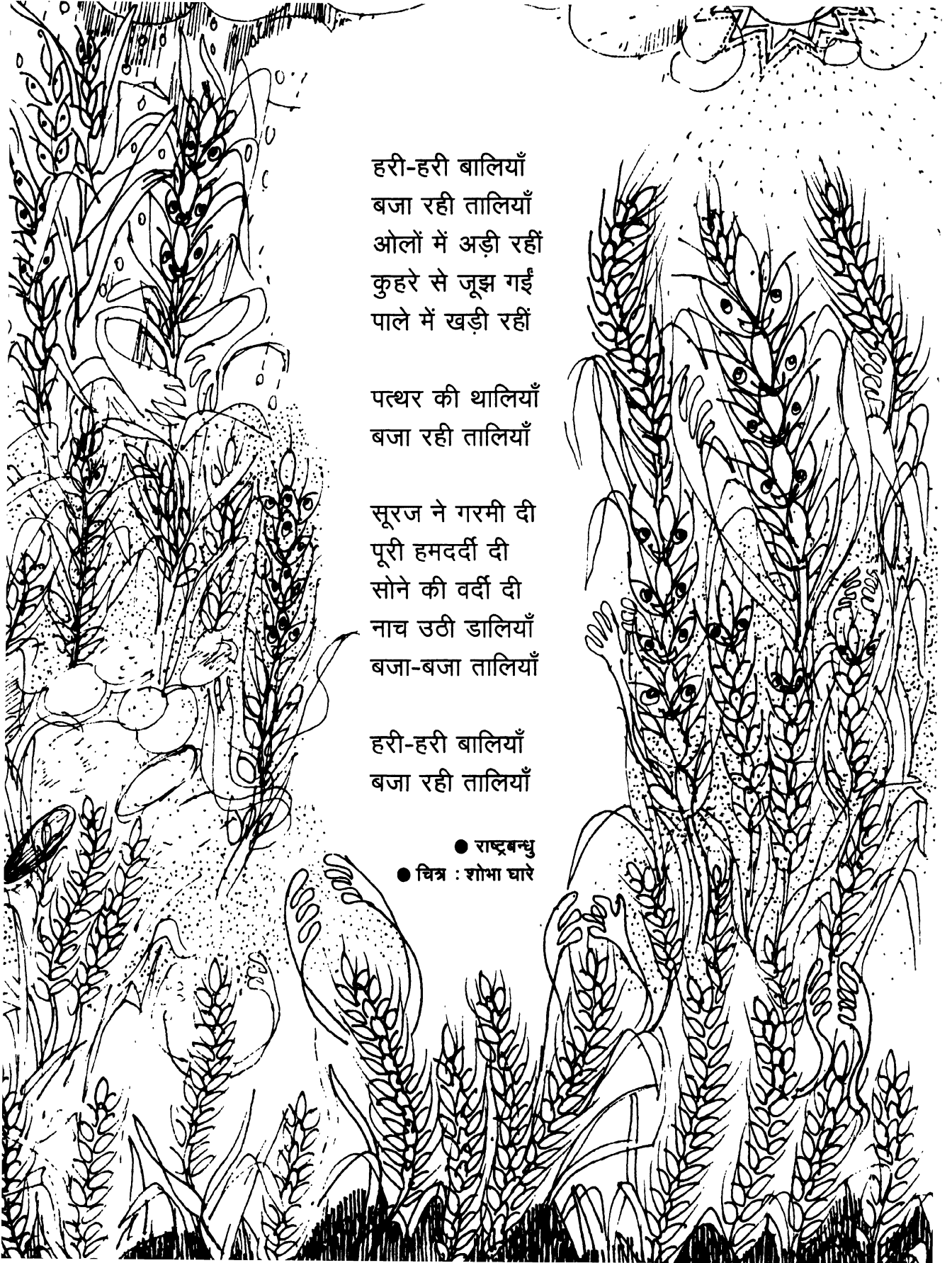
चित्र : विप्लव शशि

करना, नहाना, स्कूल जाना, झाड़ू लगाना, छियाछाई खेलना, गृहकार्य के बीच भी हर दिन को खास बना सकती हैं। पर होता यह है कि हम ऐसी छोटी-छोटी खुशियों, नएपन से भरे अनुभवों का मज़ा लेना भूल ही जाते हैं। और तब हमें ज़रूरत पड़ती है कि नए साल या किसी खास तारीख या त्यौहार का इंतज़ार करें - कि मिठाइयाँ खाएँगे, खुशियाँ मनाएँगे, मज़ा आएगा !

तो चलो, इस नए साल में कोशिश करते हैं कि हर दिन को कुछ नया बनाएँ। हर रोज़ ऐसा कुछ नया करें जो मन को ताज़गी से भर दे।

● चकमक

चकमक	पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता	चंदे की दरें
<p>मासिक बाल विज्ञान पत्रिका</p> <p>वर्ष-16 अंक-7 जनवरी, 2001</p> <p>सम्पादन वितरण</p> <p>विनोद रायना कमल सिंह</p> <p>राजेश उत्साही मनोज निगम</p> <p>कविता सुरेश अशोक रोकड़े</p> <p>दुलदुल विश्वास सहयोग</p> <p>विज्ञान परामर्श राकेश खत्री</p> <p>सुशील जोशी सुशील शुक्ल</p>	<p>एकलव्य</p> <p>ई-1/25</p> <p>अरेरा कॉलोनी,</p> <p>भोपाल - 462 016</p> <p>(म. प्र.)</p> <p>फोन : 463380</p> <p>कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से</p>	<p>एक प्रति : 10.00 रुपए</p> <p>छमाही : 50.00 रुपए</p> <p>वार्षिक : 100.00 रुपए</p> <p>दो साल : 180.00 रुपए</p> <p>तीन साल : 250.00 रुपए</p> <p>आजीवन : 1000.00 रुपए</p> <p>सभी में डाक खर्च हमारा</p> <p>चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।</p>



हरी-हरी बालियाँ
बजा रही तालियाँ
ओलों में अड़ी रही
कुहरे से जूझ गईं
पाले में खड़ी रहीं

पत्थर की थालियाँ
बजा रही तालियाँ

सूरज ने गरमी दी
पूरी हमदर्दी दी
सोने की वर्दी दी
नाच उठी डालियाँ
बजा-बजा तालियाँ

हरी-हरी बालियाँ
बजा रही तालियाँ

- राष्ट्रबन्धु
- चित्र : शोभा घारे

क्या वास्तव में 14 जनवरी को होती है?

मकर संक्रान्ति

सुशील जोशी

कैलेण्डर के अनुसार त्यौहारों की तारीखें हर वर्ष बदलती रहती हैं। मगर एक त्यौहार ऐसा है जिसकी तारीख एकदम निश्चित है – मकर संक्रान्ति। यह हर वर्ष 14 जनवरी को ही आती है। ऐसा क्यों है कि बाकी सारे त्यौहारों की तारीखें बदलती हैं लेकिन मकर संक्रान्ति की तारीख नहीं बदलती?

आखिर यह मकर संक्रान्ति किस बात का प्रतीक है? यह किस खगोलीय घटना की तरफ इशारा करती है? आमतौर पर माना जाता है कि सूर्य इस दिन उत्तरायण हो जाता है। इसका मतलब यह है कि सूर्य दक्षिण की ओर मकर रेखा तक जाकर वापस उत्तर की ओर गति आरम्भ कर देता है।

तुम सोच रहे होंगे कि सूर्य की गति का क्या मतलब? तुमने यह पढ़ा होगा कि सूर्य तो एक जगह स्थिर है, पृथ्वी तथा सौर मण्डल के अन्य तारे ही उसका चक्कर काटते हैं। यह बात बिल्कुल सही है। सूर्य अपनी जगह स्थिर ही है। परन्तु हमारी पृथ्वी की गतियों के कारण हमें ऐसा लगता है कि सूर्य गति कर रहा है। जैसे पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण ऐसा लगता है जैसे सूर्य सुबह पूरब से उगता है, पूरे आसमान का चक्कर काटकर शाम को पश्चिम में डूब जाता है। पर ऐसा होता तो है नहीं। सिर्फ हमें ऐसा प्रतीत होता है। सूर्य की इसी 'गति के आभास' को सूर्य की दैनिक गति कहा जाता है। तो यहाँ हम तुम्हें पहले से ही बता दें कि इस लेख में कई जगह सूर्य की गति की बात की गई है। हर जगह तुम पढ़ते हुए यह समझ लेना कि यह सूर्य की आभासीय गति की बात हो रही है। और उत्तरायण-दक्षिणायण समझ पाए कि 4 नहीं? उसके बारे में आगे विस्तार से दिया है।

खैर, हम यहाँ बात कर रहे थे सूर्य के दक्षिण की ओर मकर रेखा तक जाकर वापस उत्तर की ओर गति करने की। कुछ लोग कहते हैं कि यह घटना 14 जनवरी को होती है। किन्तु मजे की बात यह है कि वास्तव में यह घटना 14 जनवरी को नहीं बल्कि 22 दिसम्बर के दिन होती है।

कहा यह भी जाता है कि सूर्य इस दिन मकर राशि में प्रवेश करता है। जबकि तथ्य यह है कि सूर्य का मकर राशि में प्रवेश 14 जनवरी को नहीं बल्कि 23 जनवरी को होता है। सवाल यह उठता है कि फिर मकर संक्रान्ति क्या चीज़ है? हम यहाँ इसी सवाल का जवाब खोजने की कोशिश करेंगे।

चन्द्र और सौर वर्ष

दरअसल सारे हिन्दू व मुस्लिम त्यौहार चन्द्र मासों व तिथियों के आधार पर तय किए गए हैं। चन्द्र मास का मतलब होता है शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक या कृष्ण प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का समय। यह मास लगभग 29 दिन 11 घण्टे का होता है। इसके आधार पर एक चन्द्र वर्ष 354 दिन, 8 घण्टे और 49 मिनट का होता है। यदि सूर्य की गति के आधार पर वर्ष की अवधि निकालें तो वह 365 दिन, 6 घण्टे और 12 मिनट की होती है। हमारे कैलेण्डर भी सूर्य वर्ष के आधार पर ही बने हैं। और यह तो तुम जानते ही होंगे कि 6 घण्टे 12 मिनट की अवधि का खामियाजा पूरा करने के लिए हम लोग हर चौथे वर्ष फरवरी में एक दिन जोड़कर लीप वर्ष बना लेते हैं। खैर यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि एक सौर वर्ष में एक चन्द्र वर्ष और 11 दिन होते हैं। साल दर साल चन्द्र वर्ष और सौर वर्ष में अन्तर बढ़ता

चकमक

जनवरी, 2001

जाता है। हर साल सूर्य वर्ष की तुलना में 11 दिन पहले ही चन्द्र वर्ष खत्म होकर नया चन्द्र वर्ष चालू हो जाता है।

इस समस्या को कैसे हल किया जाए? इस्लामी कैलेण्डर में तो चन्द्र वर्ष और सौर वर्ष के बीच तालमेल बैठाने का प्रयास किया ही नहीं किया गया है। इसीलिए उसमें महीनों, त्यौहारों आदि का मौसम लगातार बदलता रहता है। फिर कुछ वर्षों (लगभग 47 वर्षों) में घूमकर ये महीने व त्यौहार फिर उसी मौसम में आते हैं। जैसे पिछले साल रमजान का महीना दिसम्बर में मनाया गया और ईद मनाई गई 28 दिसम्बर को। अब तुम देखना इस साल ईद कुछ दिन पहले ही आ जाएगी।

हिन्दू पंचांग में इस समस्या का समाधान किया गया है। सौर वर्ष और चन्द्र वर्ष में 11 दिन का अन्तर है। यह अन्तर हर तीसरे साल 1 महीने के लगभग हो जाता है। अतः हर तीसरे साल 1 अधिक मास जोड़कर दोनों वर्षों को फिर साथ-साथ ला दिया जाता है। परन्तु बीच के दो वर्षों में त्यौहार, चन्द्र मास वगैरह बीस दिन इधर-उधर हो जाते हैं। तीसरे साल फिर सब ठीक हो जाता है।

लेकिन मकर संक्रान्ति की तारीख क्यों नहीं बदलती? असल में मकर संक्रान्ति एक ऐसा त्यौहार है जो सूर्य की गति से जुड़ा है। बाकी सारे

त्यौहार चन्द्र मास की तिथियों से तय होते हैं। चूँकि हमारा वार्षिक कैलेण्डर सूर्य पर आधारित है इसलिए इन सभी त्यौहारों की तारीखें बदलती रहती हैं। मगर मकर संक्रान्ति सूर्य की गति पर आधारित है। इसलिए साल दर साल उसी तारीख को होती है।

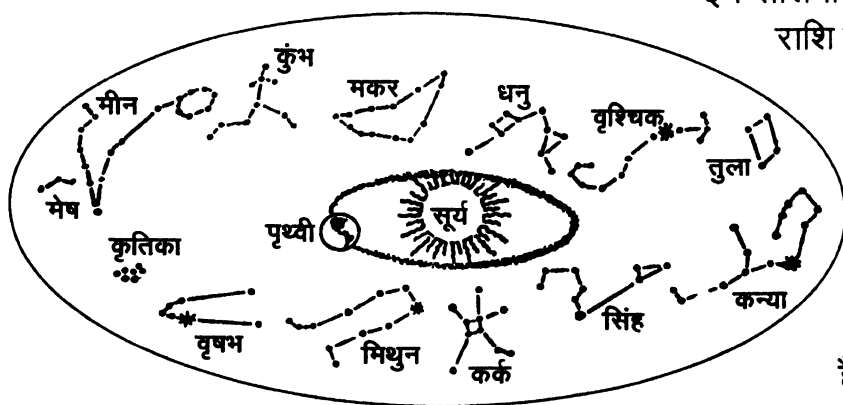
सूर्य की गति

आकाश में सूर्य की कई गतियाँ देखी जा सकती हैं। पहली, सबसे आसानी से दिखाई पड़ने वाली गति है दिन-रात वाली गति। रोज सुबह सूरज का उगना और शाम को डूबना सभी देखते हैं। यह वही आभासीय दैनिक गति है जिसकी चर्चा हमने शुरू में की थी।

सूर्य की दूसरी गति वार्षिक गति है। इस गति को समझने के लिए केवल पृथ्वी की स्थिति को समझना काफी नहीं है। इसके लिए आकाश के शेष तारों की स्थिति को भी समझना पड़ेगा। यदि हम तारों या तारा मण्डलों को देखें, तो सूर्य उनके सापेक्ष गति करता हुआ प्रतीत होता है। कभी वह एक तारामण्डल के सामने होता है, तो कभी दूसरे तारामण्डल के सामने। यहाँ भी वही चक्कर है। असल में पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द अपनी परिक्रमा पथ पर घूमती हुई एक-एक राशि के सामने से गुजरती है। लेकिन हम तो यह पूरा नजारा पृथ्वी से ही देख रहे हैं। इसलिए लगता है जैसे कि सूरज इन राशियों में से होकर गुजर रहा है। पृथ्वी जिस राशि के करीब होती है उससे ठीक 180°

उलटी तरफ की राशि में सूर्य दिखाई पड़ता है।

इन तारामण्डलों में तारों की स्थिति नहीं बदलती है। इन तारामण्डलों के नाम भी हैं। ये नाम उनसे बनने वाले आकार पर आधारित हैं इनमें से 12 तारामण्डलों को



विभिन्न राशियों के नाम दिए गए हैं –
 मेष से लेकर मीन तक। पूरे
 आकाश को 12 बराबर
 भागों में बाँटा गया है।
 प्रत्येक भाग 30 अंश
 का है। सूर्य वर्ष भर
 एक के बाद एक इन
 12 राशियों में दिखाई
 पड़ता है।

यहाँ दिए चित्र में
 राशियों के साथ दी गई
 तारीखें यह दर्शाती हैं कि सूर्य
 किस दिन किस राशि में प्रवेश करता है।

ज़ाहिर है कि सूर्य का मकर राशि में प्रवेश 14
 जनवरी को नहीं बल्कि 23 जनवरी को होता है।

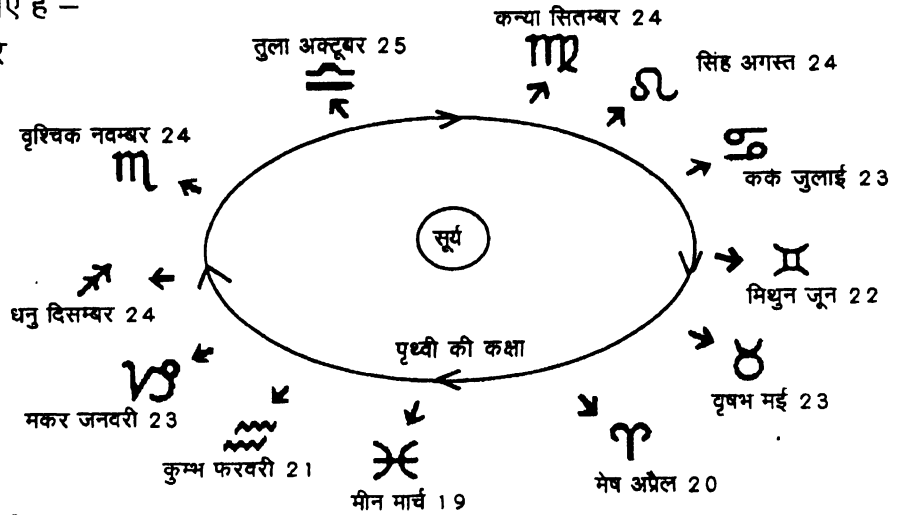
मकर का महत्व

दरअसल मकर संक्रान्ति में मकर का महत्व
 शायद कुछ और है। इसके लिए हमें सूर्य की एक
 और गति पर ध्यान देना होगा।

तुमने शायद ध्यान दिया होगा कि वर्ष भर सूर्य
 एक ही स्थान से नहीं उगता। यह भी देखा होगा
 कि वर्ष के अलग-अलग समय पर घर में धूप भी
 अलग-अलग स्थानों पर पड़ती है। इसका क्या
 कारण है?

इसका कारण यह है कि पूरे वर्ष में आकाश
 में सूर्य का दैनिक मार्ग उत्तर से दक्षिण और दक्षिण
 से उत्तर के बीच डोलता रहता है। और इसका
 कारण यह है कि पृथ्वी की धुरी परिक्रमा पथ से
 ठीक लम्बवत् (90° पर सीधी खड़ी) न होकर
 23.5 अंश झुकी हुई है। इसलिए हमें ऐसा प्रतीत
 होता है कि सूर्य का पथ उत्तर-दक्षिण डोलता है।
 बहरहाल हम इसे सूर्य की ही गति मान लेते हैं।

यदि वर्ष भर का रिकॉर्ड देखें, तो पता चलता
 है कि पूरब से पश्चिम जाते हुए सूर्य का दैनिक मार्ग



भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर मकर रेखा तक
 जाता है, फिर लौटकर भूमध्य रेखा पर आता है।
 इसके बाद सूर्य का रास्ता उत्तर की ओर कर्क
 रेखा तक जाता है और फिर भूमध्य रेखा पर लौट
 आता है।

सूर्य की इसी गति (यानी पृथ्वी की धुरी के झुके
 होने) के कारण ही मौसम बदलते हैं। इसी गति की
 वजह से साल भर दिन और रात की लम्बाई भी
 बदलती रहती है। गर्मियों में दिन लम्बे होते हैं तो
 रातें छोटी और जाड़ों में दिन छोटे तो रातें लम्बी-
 लम्बी। इस दौरान उत्तरी गोलार्ध में सबसे छोटा
 दिन तब आता है जब सूर्य मकर रेखा पर होता है।
 इसके बाद दिन बड़े होना शुरू हो जाते हैं।

उत्तरायण-दक्षिणायन

जिस दिन सूर्य मकर रेखा पर होता है उससे
 पहले वह रोज थोड़ा-थोड़ा दक्षिण की ओर जाता
 प्रतीत होता है। इसे दक्षिणायन कहते हैं। जब सूर्य
 मकर रेखा को छूकर वापस उत्तर की ओर लौटने
 लगता है तब (दिसम्बर 22) वह उत्तरायण
 कहलाता है। यदि सूर्य के मकर रेखा को छूकर
 वापस पलटने को मकर संक्रान्ति कहें तो यह
 घटना 14 जनवरी को नहीं बल्कि 22 दिसम्बर

के दिन होती है। पंचांगों में आज भी सूर्य को 14 जनवरी तक दक्षिणायन और 15 जनवरी से उत्तरायण बताया जाता है। वैसे रोचक तथ्य यह है कि पंचांगों में भी सूर्योदय के आँकड़े देखें तो 22 दिसम्बर के बाद दिन बड़े होने लगते हैं। मतलब यह कि अवलोकन के हिसाब से तो पंचांगों में भी 23 दिसम्बर से उत्तरायण (दिन बड़े होना) शुरू हो जाता है। पर मान्यता के मामले में हम अब भी लकीर के फकीर बने हुए हैं। अब भी हम 15 जनवरी से उत्तरायण मानते हैं।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि न तो सूर्य का मकर राशि में प्रवेश 14 जनवरी को होता है और न ही सूर्य उत्तरायण 14 जनवरी को होता है। ऐसे में सवाल यह है कि फिर 14 जनवरी क्या है?

मकर राशि और मकर रेखा

हमने अब तक पृथ्वी की तीन गतियों के बारे में बात की:

1. अपनी धुरी का चक्कर काटना
2. सूर्य की परिक्रमा
3. धुरी का झुकाव

इनकी वजह से हमें सूर्य की विभिन्न गतियाँ नज़र आती हैं। अब हमें पृथ्वी की गति की एक और विशेषता की बात करनी होगी। परन्तु उससे पहले सौर वर्ष की एक विशेषता जान लें।

सौर वर्ष के दो रूप

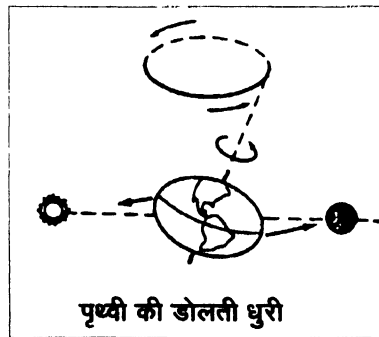
जब पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा कर ले तो इसे एक वर्ष माना जाता है। परन्तु एक परिक्रमा गिनने के दो तरीके हो सकते हैं।

पहला तरीका – जब सूर्य किसी राशि विशेष (मसलन मेष) से शुरू करके वापस उसी राशि में पहुँच जाए तो उसे एक वर्ष की अवधि मानते हैं।

इसे सौर वर्ष कहते हैं। यह वर्ष तारीखों से मेल खाता है।

दूसरा तरीका – हम जानते हैं कि वर्ष में दो बार ऐसी स्थिति आती है जब दिन-रात बराबर होते हैं। इसे समपात कहते हैं। इसमें समपात-1 से शुरू करके पुनः उसी स्थिति में आने के बीच की अवधि को एक वर्ष माना जा सकता है। इसे अयनवर्ष कहते हैं। यह वर्ष मौसमों से मेल खाता है।

मान लो शुरुआत उस दिन से करते हैं जब सूर्य मकर रेखा पर है और साथ ही किसी राशि विशेष में है। अगले वर्ष जब फिर से अवलोकन करेंगे तो पाएँगे कि सूर्य मकर रेखा तक तो पहुँच गया है पर पिछले साल वाली राशि के सापेक्ष अपनी पुरानी स्थिति पर नहीं पहुँचा है। हालांकि यह अन्तर बहुत ही कम होगा। मगर वर्ष-दर-वर्ष यदि ऐसा ही चलता रहा तो इन दोनों का अन्तर बढ़ता चला जाएगा। इस अन्तर का कारण यह है कि पृथ्वी की धुरी एक ही दिशा में स्थिर नहीं है बल्कि किसी डोलते हुए लट्टू की तरह डोलती है।



गणनाओं से पता चलता है कि सूर्य की शुरुआती स्थिति पूरे 26,000 वर्ष बाद आएगी। यानी इतने वर्षों बाद सूर्य की स्थिति फिर से ऐसी होगी कि वह मकर रेखा को भी छुएगा और शुरुआती राशि में भी होगा।

राशियाँ कुल 12 हैं। अर्थात्

26,000 वर्षों में सूर्य की मकर रेखा को छूने वाली स्थिति इन सभी 12 राशियों से गुज़रेगी और फिर शुरुआती राशि में नज़र आएगी। इस आधार पर हम गणना कर सकते हैं कि एक राशि का परिवर्तन होने में कितने वर्ष लगेंगे – $26,000 \div 12 = 2166$ वर्ष। यानी किसी भी राशि (जैसे मेष) में रहते हुए भी लगभग 2100

साल तक सूर्य मकर रेखा को छुएगा। यह जरूर है कि हर साल उस राशि की तुलना में सूर्य की स्थिति थोड़ी खिसकती जाएगी। पर उस राशि को पार करने में उसे 2166 साल लगेंगे।

आज सूरज मकर रेखा को 22 दिसम्बर को छूता है और उस वक्त यह धनु या वृश्चिक राशि में होता है। चित्र को देखने से पता चलता है कि धनु राशि मकर राशि के बाद आती है। तो आज से लगभग 2,000 वर्ष पूर्व मकर रेखा को छूते वक्त सूर्य अवश्य ही मकर राशि में रहता होगा।

इसी प्रकार से उस प्राचीन काल में (लगभग 2000 साल पहले) कर्क रेखा को छूते समय सूर्य कर्क राशि में रहता होगा (आज यह कर्क रेखा को छूते वक्त मिथुन में होता है।)

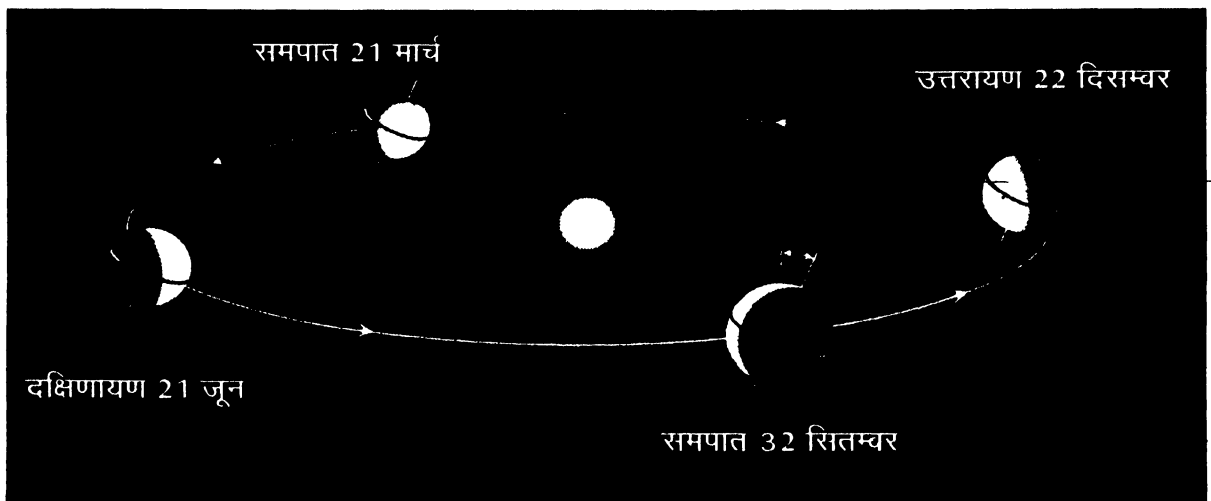
सम्भवतः मकर व कर्क रेखाओं के नाम इसी आधार पर (लगभग 2100 वर्ष पूर्व) रखे गए होंगे।

अभी भी स्पष्ट नहीं है कि जब 14 जनवरी को सूर्य न तो मकर रेखा को छूता है और न मकर राशि में प्रवेश करता है तब 14 जनवरी को ऐसा क्या होता है? एक ही सम्भावना है। और यह ध्यान रखना कि जो बात कही जा रही है वह सिर्फ एक सम्भावना है।

पिछले लगभग 2000 वर्षों में सूर्य का मकर राशि में प्रवेश निम्नानुसार बदला है : 2000 साल पहले 22 दिसम्बर, आज 23 जनवरी। इसका मतलब यह है कि इस बीच कभी न कभी सूर्य का मकर राशि में प्रवेश 14 जनवरी को भी होता होगा। हम गणना कर सकते हैं कि ऐसा कब हुआ होगा। 22 दिसम्बर से 23 जनवरी यानी कुल 32 दिन का परिवर्तन लगभग 2100 साल में हुआ। तो 22 दिसम्बर से 14 जनवरी (कुल 23 दिन) का परिवर्तन होने में 1500 वर्ष लगे होंगे।

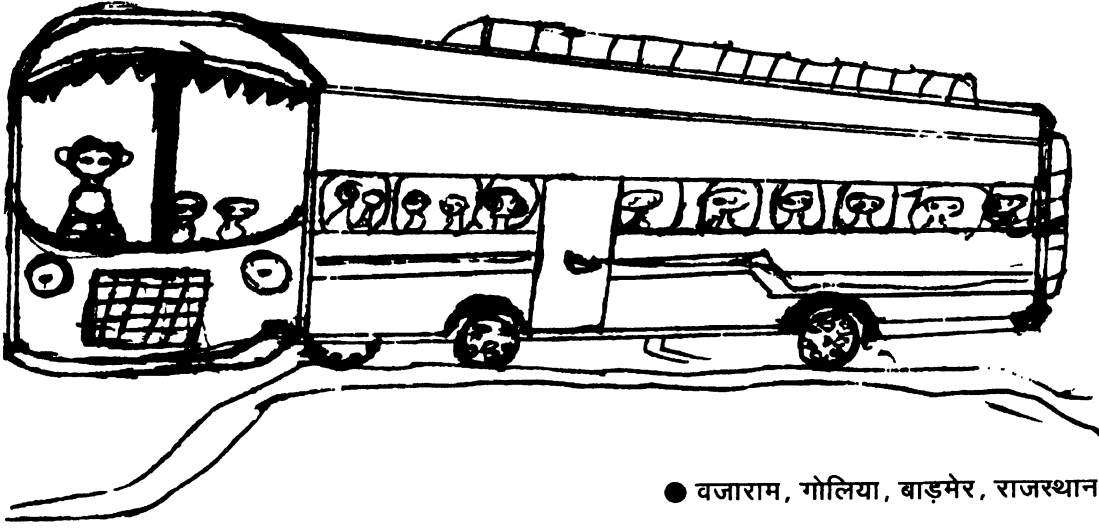
यानी लगभग 500 ईस्वी में सूर्य 14 जनवरी को मकर राशि में प्रवेश करता रहा होगा। और उस जमाने के लोगों को अपने पूर्वज्ञान से यह मालूम रहा होगा कि मकर राशि में प्रवेश और मकर रेखा को छूना एक साथ होता है तो हो सकता है कि इन दो बातों को जोड़कर 14 जनवरी को मकर संक्रान्ति घोषित कर दिया गया हो। आज हमें यह मालूम है कि ऐसा 500 ईसवी में नहीं, लगभग 2000-2100 साल पहले होता था। और यह भी कि आज भी ऐसा नहीं होता। आजकल सूर्य 22 दिसम्बर को मकर-रेखा को छूता है और 23 जनवरी को मकर राशि में प्रवेश करता है लेकिन सम्भवतः फिर भी वही धारणा आज भी चली आ रही है।

• • •





मेरा पन्ना



● वजाराम, गोलिया, बाड़मेर, राजस्थान

बच्चे को बचाया

लगभग तीन साल पहले मैं औद्योगिक क्षेत्र थाने की पुलिस लाईन में रहता था। वहाँ पर मैं, मेरा भाई और मेरे पिता थे। तभी एक लड़का दौड़ता हुआ मेरे घर पर आया और बोला कि काका मेरे घर पर गैस सिलेंडर खुला रह गया है और मेरे घर पर मेरा छोटा भाई है। वह बहुत ही घबराया हुआ था। मैंने मन ही मन में सोचा कि इसमें हम क्या कर सकते हैं?

तभी मेरे पिताजी उठ खड़े हुए और दौड़े-दौड़े गए। वहाँ पर और सभी घरों के लोग पहुँच गए थे। एक कहता कि तुम अन्दर जाओ और खिड़की खोल दो। कोई कहता बच्चे को बचाओ। मैंने सोचा कैसे-कैसे लोग हैं खुद तो बाहर खड़े हैं और दूसरों को अंदर जाने का कह रहे हैं वाह री दुनिया।

इतने में मेरे पिताजी ने डण्डे से तार की बाऊंडरी जिस पर करंट था उसे निकाला जिससे की घर में करंट न फैल जाए। और घर में घुसकर खिड़कियाँ खोल दीं। इधर मेरी मम्मी घबराई थी। तभी मेरे पापा ने बच्चे को उठाया और घर से बाहर ले आए। कुछ ही देर में घर से गैस निकल गई। अब वह बच्चा पाँच साल का हो गया है।

● आशिष सिरोंजिया, नवमी, देवास, म.प्र.

हम गए महाराष्ट्र

हम घूमने गए थे, महाराष्ट्र
जाकर देखा सारा राष्ट्र
जा बैठे शादी के पास
रास न आई सारी रात
बिजली चमकी अचानक चमसे,
डर गए बच्चे अचानक धम से।
बादल गरज रहे थे, धड़-धड़
बिजली चमक रही थी, चम-चम
आसमान में काले बादल
देखो तो लगता था काजल
टिप-टिप-टिप-टिप पानी बरसा
हम सबका दिल धक-धक धड़का
बस और बन्द हो गया पानी
खत्म हो गई कविता सयानी।

● विकास अखण्ड, वेदनगर, उज्जैन, म.प्र. 9



नया साल

जब नया साल आया था तब हमने और हमारी कक्षा वालों ने पैसे मिलाकर हमारी कक्षा को सजाया था और कुछ खाने की चीजें लाए। और फिर हमारे प्रिंसिपल को हमारी कक्षा में बुलाकर उनका स्वागत किया। फिर हम लोगों ने खेल-कूद किए, अंताक्षरी भी खेली। हमारी कक्षा अध्यापिका ने हमें खेल खिलवाए। हमने उस दिन दिल खोलकर मस्ती की थी। हमें उस दिन बड़ा मजा आया था। आज भी जब उस दिन को याद करते हैं तो दिल खुश हो जाता है।

● सुलोचना तिवारी, छटवीं, पता नहीं लिखा

मेरी सहेली



मैं जब सातवीं में थी तब मेरी सहेली थी मोनिका। वह इस स्कूल में पाँचवीं से आई थी। मैं चाहती थी कि उससे मैं अच्छी दोस्ती करूँ। मेरी और उसकी दोस्ती बहुत दिनों तक रही। वह मुझसे दोस्ती नहीं करना चाहती थी। पर मैं सोचती थी कि मुझे एक अच्छी दोस्त मिल जाए।

मैं सच्ची बात बताती हूँ। हमारा किसी विषय का टेस्ट हुआ याद नहीं कि कौन से विषय का हुआ। पर उस टेस्ट की तैयारी उससे अच्छी हुई और मुझसे भी अच्छी हुई। पर उस टेस्ट में जो प्रश्न आए उनमें से एक प्रश्न था जो उसे आता था और मुझे नहीं और एक प्रश्न था जो मुझे आता और उसे नहीं आता। हम दोनों आगे-पीछे ही बैठे थे। उसने पहले मुझसे पूछा, मैंने उसे बताया। पर जब मैंने उससे पूछा तो उसने मुझे नहीं बताया। और वह प्रश्न उसे आता था। जब मैं क्लास से बाहर आई तो मैंने उससे पूछा, तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? पर उसने मेरी तरफ मुँह मोड़ लिया। पर मेरी गलती थी कि मेरी तैयारी सफल नहीं रही, पर मुझे दुख हुआ। उसे अच्छे मार्क्स प्राप्त हुए। मुझे अच्छा लगा कि मेरी सहेली ने अच्छे मार्क्स प्राप्त किए।

उल्लू

एक दिन हम गुप्तार घाट जा रहे थे तो मैंने कहा कार रोको। पार्क में हम दौड़कर जाएँगे। अंकल ने कार रोकी मैं, तारा, आकाश दौड़कर पार्क गए। अंकल जब पार्क पहुँचे तो मूँगफली खाने लगे। मैंने एक पेड़ पर देखा की पेड़ के रंग का एक उल्लू बैठा है। मैं दौड़ के गया और आंटी अंकल को बताया। आंटी अंकल दौड़े-दौड़े आए और उल्लू को देखा। थोड़ी देर बाद उल्लू ने इधर-उधर देखा। फिर उड़ गया। मैंने ऐसा उल्लू पहली बार देखा है।

● कृष्णा कुमार, खोजनपुरा, फैजाबाद, उ.प्र.

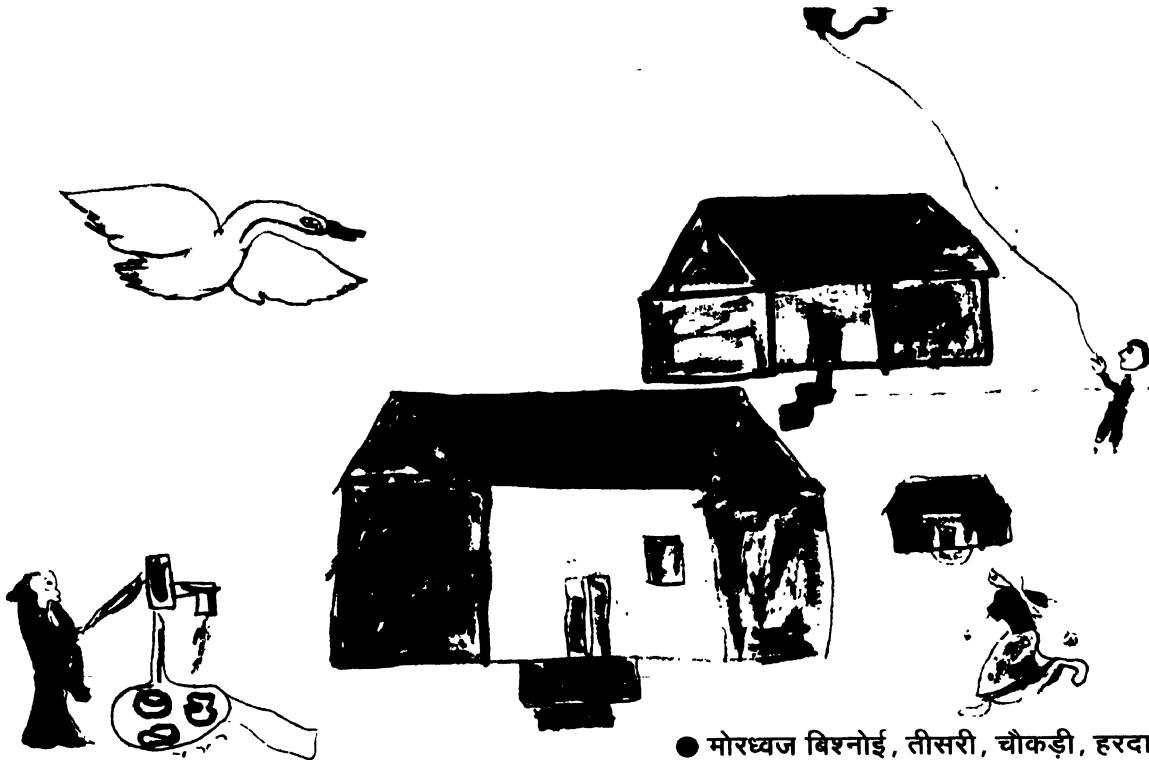
मेरी गुड़िया

मम्मी देखो मेरी गुड़िया,
लगता हो गई है बीमार।
खाती नहीं है, पीती नहीं है,
करती नहीं मुझसे बातें चार।

पापा आओ, भइया आओ,
जल्दी डॉक्टर को बुलवाओ।
मेरी प्यारी गुड़िया रानी,
तुम भली-चंगी हो जाओ।

फिर साथ खेलें-खायेंगे हम,
घूमने दूर-देश जाएँगे हम।
खत्म परीक्षा हो गई छुट्टी,
मिलकर हम मचाएँगे उधम।

● फूल 'साकिब', गोरखपुर, उ.प्र.



● मोरध्वज विशनोई, तीसरी, चौकड़ी, हरदा, म.प्र. 11



हफ्ता

सात दिनों से बनता हफ्ता
 सोमवार को हालत खस्ता
 मंगल को विश्राम नहीं है
 बुध को कोई काम नहीं है
 गुरु दिखाए रस्ता।
 शुक्र शुक की, शनि बुलाता
 रविवार दौड़ा आ जाता
 सात दिनों का चक्कर ऐसा,
 घोड़ा बदाम खाई खेल हो जैसा।



● दिव्या गुमास्ता, भोपाल, म.प्र. ● अनामिका रघुवंशी, दूसरी, रामगढ़, नैनीताल, उ.प्र.

मेरा कुत्ता

मेरा कुत्ता प्यारा-सा है
 घर की रखवाली करता है
 नाम तो उसका मोती है
 पूँछ थोड़ी-सी छोटी है।
 पूँछ है या छड़ी है
 जब देखो तब खड़ी है।
 घर में सबका राज दुलारा
 बड़ा प्यारा है मतवाला।
 ज़ोर ज़ोर से शोर मचाता
 जब अजनबी कोई घुस जाता।
 सब बच्चे इससे बोलें
 ये भी उनके संग-संग खेले
 सुबह शाम हम सैर को जाते
 ये हम सब में सबसे आगे
 मेरा कुत्ता प्यारा-सा
 घर में सब का राजदुलारा
 बहुत प्यार इससे करती हूँ
 हरदम अपने संग रखती हूँ



आखिर चोर कौन

हमारे हॉस्टल में हम नए-नए हैं। महीने भर में ही क्या हुआ पता ही नहीं चला। एक दिन हम लोग अपना-अपना सामान जमा रहे थे। फिर हम लोग सामान की कमी के कारण बाज़ार जाने के लिए तैयार हुए और पर्स खोला तो पैसे ही नहीं थे। दस-पन्द्रह दिन बाद हम लोग अपने घर गए और फिर आने पर देखा कि छाता ही नहीं है। हम लोग तो दंग रह गए। पहले पर्स, फिर छाता। यूँ ही 10-15 दिन बाद फिर पैसों की चोरी हुई। किसी के साठ तो किसी के अस्सी, दस, कई रुपए चोरी हो गए और पता ही नहीं चला। अभी भी चोरी होती है पर सामानों की तो कम, पैसों की ज्यादा।

● कुलवेन्द्र सिंह पिछोड़े, छठवीं, सिझौरा, मण्डला, म.प्र.

वर्ग पहेली - 114

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. सबके सिर पर ओंघा धरा, एक पहेली (2,2,2,1,2)
7. बेतरतीबी में घुमा है बाण (2)
8. नमस्कार के लिए एक और शब्द (3)
10. उल्टे जादूगरी में दूसरा (2)
11. ऋषि का वह अंग जो धूप में भोजन तैयार करता है (2)
13. नियम तोड़ने या सामान्य भूल-चूक के लिए पैसे से चुकाए जाने वाली सजा (4)
15. वह विशाल पेड़ जिसमें से जटाएँ निकलती हैं (4)
17. चक्के का अक्ष या किल्ली (2)
18. खाँसी (2)
19. दामन काला में मोती है (3)
20. कल और कल के बीच का दिन (2)
23. कल का काम आज करने को कहने वाला मुहाबरा (2,2,1,2,2)

1	2		3		4		5	6
							7	
8				9		10		
			11					12
13		14			15		16	
				17				
	18					19		
20			21		22			
23								

संकेत : ऊपर से नीचे

2. कपड़े पर धागे, रेशम या जरी से की जाने वाली कढ़ाई (5)
3. बोझ तले वधा हुआ (2)
4. एक, दो..... (2)
5. मेरे चाचा का मैं हूँ..... (3)
6. झगड़ा या बहस (2)
9. रुई से बनी पूनी या पलीता (2)
10. दूर और भरपूर के मेलजोल में है कठिन, बोझिल (3)

11. केरी उबालकर बनता है यह पेय (2)
12. दशा यह है कि खुश हैं (2)
13. अन्याय या अत्याचार (2)
14. हताश या उदास (3)
15. निरपराध, निर्दोष घोषित किया जाना, आज्ञाद होना (2)
16. वह तापमान जिस पर कोई ठोस वस्तु पिघलती है (3,2)
17. आग जलने से पैदा होता है यह (2)
18. आँखों में लगाया जाने वाला (3)
20. मालिक (2)
21. झगड़ा (2)
22. पिता की बहन (2)

वर्ग पहेली - 114 का हल चकमक के मार्च, 2001 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर हालकर शब्द लिखकर भेज दें।

सबसे पहले हल भेजने वालों को चकमक का मार्च, 2001 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

नई सुबह

गिरिजा कुलश्रेष्ठ

नीम की सबसे ऊँची टहनी पर चढ़कर किट्टू ने देखा अभी तो चारों तरफ अँधेरा था। आसमान में थरथराते से तारे और धुन्ध में डूबे पेड़-पौधे अभी रात शेष होने की सूचना दे रहे थे।

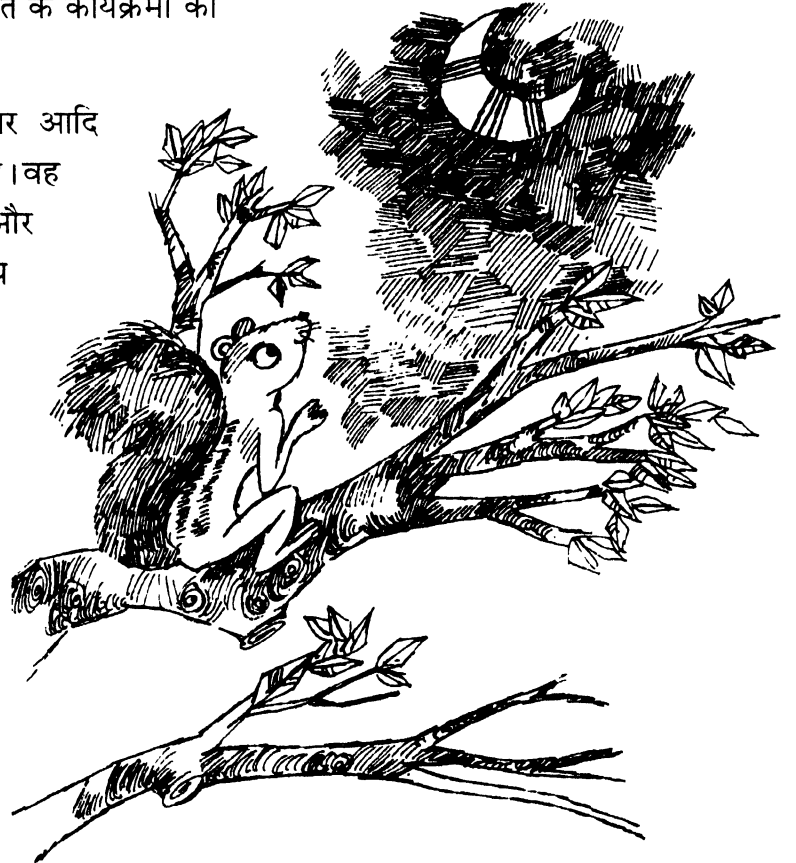
वह दिसम्बर की आखिरी रात थी। कड़कती सर्दियों में पत्ता-पत्ता काँप रहा था। किट्टू का सारा शरीर बर्फ हुआ जा रहा था लेकिन उसके मन में नई सुबह का विचार ऊष्मा पैदा कर रहा था।

इस सुबह का किट्टू को बेसब्री से इन्तज़ार था। अपनी माँ सोना गिलहरी और अनेक चिड़ियों से उसने महीनों पहले ही सुन रखा था, कि पहली जनवरी की सुबह नई और अनोखी होगी। क्योंकि इस बार साल के साथ-साथ सदी भी बदलेगी। साल या सदी का बदलना किट्टू के लिए एकदम नई बात थी, इसलिए वह सबसे अधिक उत्साहित था। अपने सारे काम छोड़कर वह मुँडेर पर धूप लेता हुआ उन तैयारियों के बारे में सुनता रहता जो नववर्ष के स्वागत उत्सव के लिए की जा रही थीं। इनमें नृत्य व गीत के कार्यक्रमों की योजना उसे बहुत पसन्द आई थी।

हरियल, मैना, पंडुक, बया, कबूतर आदि पक्षियों ने गीतों का कार्यक्रम तैयार किया था। वह कुछ इस तरह कि गाते-गाते ही सबेरा हो और नए साल का स्वागत मधुर गीतों से हो। साथ ही वे यह भी दिखाना चाहते थे कि गाना केवल पपीहा, कोयल या श्यामा को ही नहीं आता, उन्हें भी आता है।

गौरैया, बुलबुल, फुदकी, हुदहुद, कठफोड़वा आदि ने मोर के परम्परागत नृत्य से अलग नई शैली का नृत्य तैयार किया था। जिसमें उछलना, कूदना, दौड़ना, खदेड़ना और भिड़ना सब कुछ शामिल था। उनकी नज़र में खुशी जाहिर करने का यह बेहतर और

14 मौलिक तरीका था।



चकमक

जनवरी, 2001



चीटू चूहे और छुटकी छछूँदर ने शानदार दावत रखी थी, तो उल्लू व चमगादड़ ने रोशनी का बढिया इन्तज़ाम किया था। “अरे! मुझे भी तो कोई काम मिलना चाहिए, मैं भी तो स्वागत करूँगा नई सुबह का,” किट्टू इन सारी तैयारियों को देख उत्साह से भर जाता।

“तुम्हारा तो एक ही ज़रूरी काम है किट्टू जी! और मजेदार भी, कि अपनी खूबसूरत पूँछ को सँभाले मूँगफली कुतरते रहो और हम सबकी निगरानी करो,” गौरैया ने किट्टू को सलाह दी थी।

दिसम्बर की आखिरी रात अपने वशभर कोई नहीं सोया। लेकिन रात ढलते-ढलते सबको नींद के झोंके आने लगे। अकेला किट्टू ही था जो एक पल भी नहीं सोया। उसका विचार था कि सो जाने

पर नई सुबह चुपचाप निकल जाएगी और वह उसे देख भी नहीं पाएगा।

इसलिए जैसे ही कुक्कू मुर्गे ने पहली बाँग दी, वह फुर्ती के साथ पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर जा पहुँचा। वहाँ से नई सुबह को सबसे पहले अभिवादन किया जा सकता था। लेकिन आसपास घिरे अँधेरे को देख उसे कुक्कू की कमअक्ल पर गुस्सा आया। इतनी जल्दबाजी किस काम की?

“तुम्हारी अक्ल को क्या हुआ है कुक्कू! क्या अब भी तुम्हें किसी ने टॉर्च या लैम्प की रोशनी दिखाई टी.वी. के विज्ञापन की तरह, जो रात में ही सुबह का ऐलान कर बैठे।”

“अरे नहीं भाई..,” कुक्कू झेंपकर बोला, “विज्ञापन में तो पैसों वाली बात थी। लेकिन अब तो यकीनन मैंने सही समय पर बाँग लगाई है। क्या है कि सर्दियों में सूरज को ज़रा जल्दी जगाना पड़ता है। तब कहीं समय पर निकलते हैं जनाब! जल्दी ही देखना उजाला होने लगेगा..।”

सचमुच कुछ देर बाद पेड़-पौधे धुन्ध की चादर को उतारने लगे। आसमान के तारे भी एक-एक करके गायब होने लगे और पूरब दिशा में क्षितिज पर लालिमा बिखरने लगी।

“बस नई सुबह आने ही वाली है,” किट्टू ने खुश होकर देखा कि झाँझी के सुराखों से फूटती दीपक की रोशनी की तरह प्राची के क्षितिज पर सुनहरी किरणें फूटने लगी थीं और उछाली गई गेंद की तरह बड़ा लाल सूरज पहाड़ के पीछे से उभरा और ऊपर उठने लगा।

“नई सदी की पहली सुबह मुबारक हो,” पेड़ों की टहनियों पर बैठी चिड़ियाँ चहकने लगीं।

तभी सोना ने पुकारा, “किट्टू! मुबारक नई सुबह! वहाँ अकेले क्या कर रहे हो? आओ सबके साथ खुशियाँ मनाओ।”

“नई सुबह?” किट्टू ने आश्चर्य से पूछा, “कहाँ है नई सुबह? मैं तो उजाला होने से पहले का बैठा हूँ उसे देखने।”

“तुम्हें नई सुबह नहीं दिखती?” कालू कौवे का छोटा बच्चा बोल पड़ा, जो शरीर से कालू जितना बड़ा होने पर भी सूरत से काफी बचकाना और भोला दिखता था।

“तुम्हारी आँखें तो दुरुस्त हैं न!”

“मेरी आँखों को कुछ नहीं हुआ,” किट्टू तेजी से बोला, “मुझे बताओ की नई सुबह कहाँ है?”

“यही तो है नई सुबह,” कौवे के बच्चे ने अपनी माँ को सम्बोधित करके कहा, “है न माँ?”

“बिल्कुल... यही है नई सुबह,” उसकी माँ ने कहा।

नन्हा किट्टू बड़ा हैरान हुआ। उसने दुबारा सब कुछ गौर से देखा। “सब कुछ रोज जैसा ही तो है। रोज की तरह लाल रंग का सूरज उगा है, सामने पहाड़ सुरमई रंग का ही है, नदी पश्चिम की ओर ही बह रही है। खेत मैदान, पेड़-पौधे, फूलपत्ती यहाँ तक कि हवा भी रोज जैसी ही है, एक ही खुशबू वाली। आखिर नयापन है भी तो कहाँ?”



“मैं क्या जानूँ?” कौवे का बच्चा किट्टू के तकों से उलझन में पड़ गया, “माँ कहती है कि कैलेण्डर, टीवी, रेडियो, अखबार और सारी दुनिया कह रही है इसलिए उसने भी मान लिया है।”

लेकिन किट्टू के गले यह बात उतरी नहीं। सिर्फ कैलेण्डर में अंक बदलने या अखबार में छपने से ही कोई सुबह नई कैसे हो सकती है, जबकि सब कुछ रोज जैसा ही है।

“तुम्हारा सोचना भी अपनी जगह सही है।” सोना ने किट्टू को प्यार से समझाया, “दरअसल वह नयापन हमारे विचारों में है।”

किट्टू यह सुनकर और भी उलझ गया। लेकिन सोना समझाती रही, “कुछ देर के लिए मान लो कि सालभर में दीपावली, होली, ईद और क्रिसमस के त्यौहार न मनाए जाएँ तो पूरा साल कितना लम्बा और ऊबाऊ लगेगा। लेकिन ये त्यौहार हमें आनन्द और उल्लास से भर देते हैं। साथ ही हमें उम्मीदें और हौंसले भी देते हैं।”

“नई सुबह भी नए अहसास का नाम है। नए विचारों और नए संकल्पों का नाम है।

इसके बहाने हम जीवन में नयापन लाते हैं, उमंग और उल्लास भरते हैं। हँसी-खुशी से बिताए गए कुछ पल हमें काफी समय तक ताजगी का अनुभव कराते रहते हैं।...मेरे विचार से तो नई सुबह का यही मतलब है।”

‘फिर तो माँ....’ किट्टू माँ की बात को कुछ ज्यादा ही समझकर और कुछ ठहरकर बोला, “हम हर सुबह को नई सुबह मानकर भी एक खुशहाल दिन की शुरुआत कर सकते हैं।”

“क्यों नहीं? और वह सचमुच और भी अच्छी बात होगी।” तमाम चिड़ियों ने खुशी से चहकते हुए कहा और किट्टू को नववर्ष के उत्सव में खींचकर ले गईं।



सूक्ष्मदर्शी से . .



पहचान सकते हो इन चित्रों में क्या दिखाया है? सब्जियों में जो सबसे आम है, वही आलू!

हाँ, आलू ही है यह। ऊपर वाला चित्र एक ताजे, यानी जीवित कोशिका वाले आलू की चिप (कतले) का है। आलू में बड़ी मात्रा में शर्करा (स्टार्च) होती है जो चित्र में गोल-गोल अण्डे जैसी नज़र आ रही है। जो कोशिकाएँ आलू काटने में चिर नहीं पाई हैं, उनमें ये नहीं दिखाई दे रहे हैं।

दूसरा चित्र 20 मिनट तक उबाले गए आलू की चिप का है। इसमें कोशिकाओं की दीवारों तो अब भी साफ नज़र आ रही हैं। पर शर्करा उबलकर माड़ या लुगदी जैसी हो गई है।

18

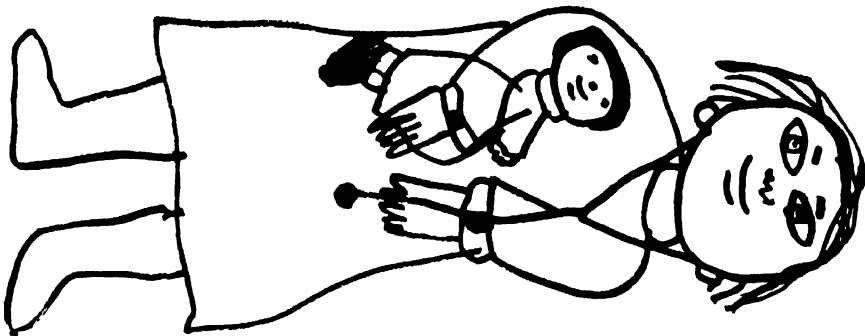
दोनों चित्र मूल आकार से 170 गुना बड़े किए गए हैं। चित्र सौजन्य "अण्डर द मायक्रोस्कोप"।

चकमक

जनवरी, 2001

शकभक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका



शाना, चार वर्ष, चण्डीगढ़, पंजाब

जुलाई

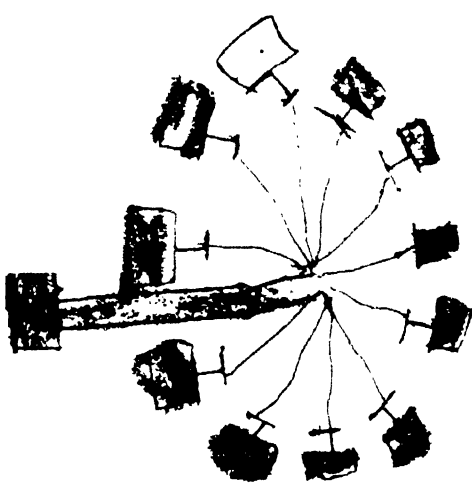
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

अगस्त

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4		
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

सितम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29



काली मालवी, सतवासा, देवास, म.प्र.

चक्रमंक

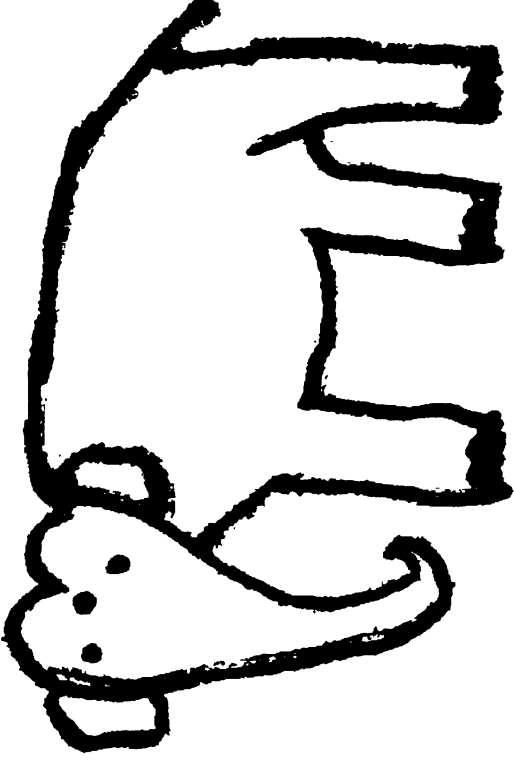
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

जनवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			



मोल्, दूसरी, लालाखेड़ी, शाजापुर, म.प्र.



ज्योत्स्ना, तीसरी, लोधर मन्धना, कानपुर, उ.प्र.

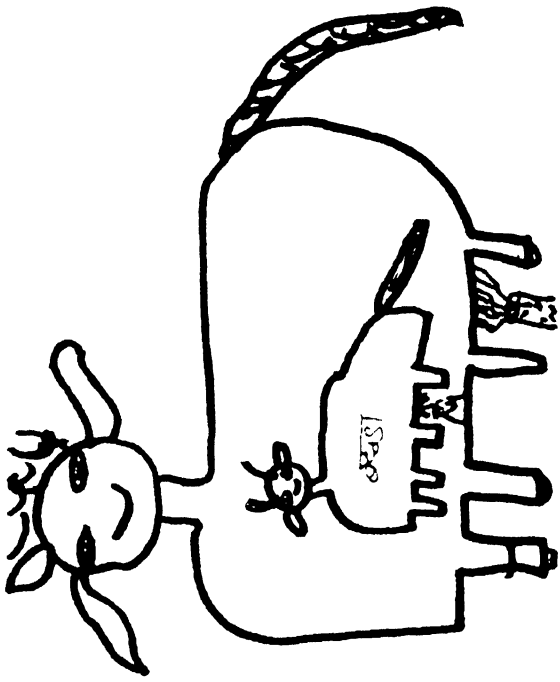
फरवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28			

मार्च

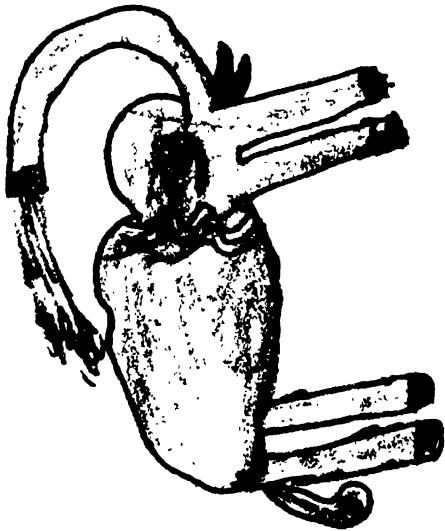
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

2001



नाम, उम्र पता नहीं लिखा

अप्रैल	
रवि सोम मंगल बुध गुरु शुक्र शनि	
1 2 3 4 5 6 7	
8 9 10 11 12 13 14	
15 16 17 18 19 20 21	
22 23 24 25 26 27 28	
29 30	



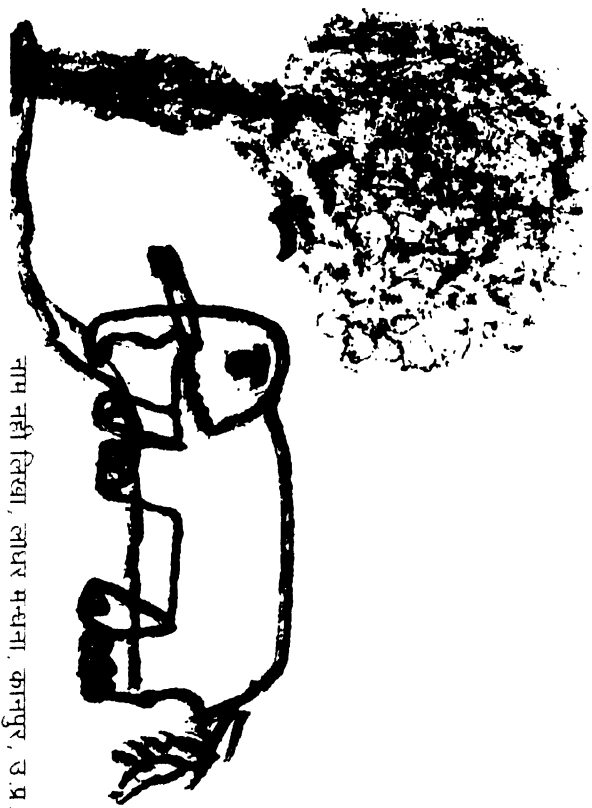
चन्द्रकांत लोवंशी, चौथी, जसोदी, खण्डवा, म.प्र.

मई	
रवि सोम मंगल बुध गुरु शुक्र शनि	
1 2 3 4 5	
6 7 8 9 10 11 12	
13 14 15 16 17 18 19	
20 21 22 23 24 25 26	
27 28 29 30 31	

जून	
रवि सोम मंगल बुध गुरु शुक्र शनि	
1 2	
3 4 5 6 7 8 9	
10 11 12 13 14 15 16	
17 18 19 20 21 22 23	
24 25 26 27 28 29 30	

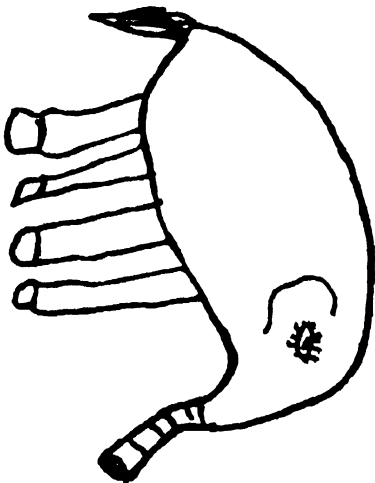
अक्टूबर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
	7	8	9	10	11	12
	14	15	16	17	18	19
	21	22	23	24	25	26
	28	29	30	31		



नाम नहीं लिखा, लाधर मन्थना, कानपुर, उ.प्र.

201



शुभि चक्रसेना, पाँच वर्ष, भापाल, म.प्र.

नवम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
	4	5	6	7	8	9
	11	12	13	14	15	16
	18	19	20	21	22	23
	25	26	27	28	29	30

दिसम्बर

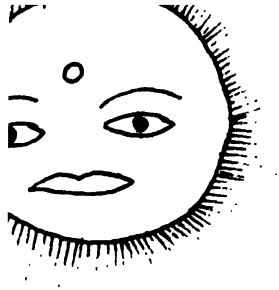
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						1
	2	3	4	5	6	7
	9	10	11	12	13	14
	16	17	18	19	20	21
	23	24	25	26	27	28
						29
						30
						31



राखी - 4 अगस्त * रवतत्रता दिवस - 15 अगस्त * गांधी जयंती - 2 अक्टूबर * दशहरा - 26 अक्टूबर
दियाली - 14 नवम्बर * गुरुनानक जयंती - 30 नवम्बर * ईद - 17 दिसम्बर * क्रिसमस - 25 दिसम्बर

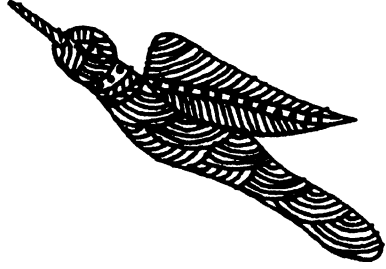
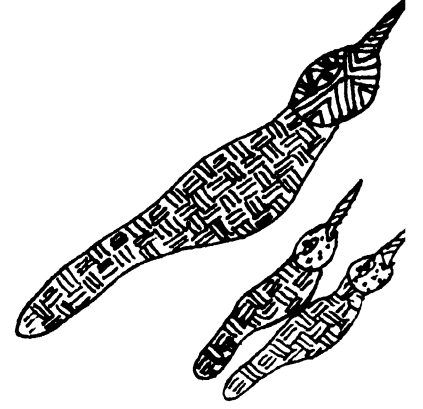


एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भापाल - 462 016 (म.प्र.) फोन (0755) 463380, फैक्स (0755) 461703, ईमेल - eklavyamp@vsnl.com

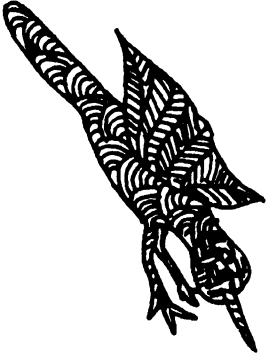


चूँ चूँ चिड़िया

सुबह-सुबह उठ रोज नहाती
फिर दाना चुगने को जाती
चुनचुन चुनचुन दाना खाती
चूँ चूँ चिड़िया गाना गाती
गुपचुप गुपचुप, गुपचुप गुपचुप



दूर गगन में वह उड़ जाती,
वापस घर धरती पर आती ।
खूब मगन हो नाच दिखाती,
फुदक फुदककर खुशी मनाती ।
फुर्र-फुर्र फुर्र-फुर्र, फुर्र-फुर्र फुर्र-फुर्र



बीन-बीनकर तिनके लाती,
सुन्दर-सा एक नीड़ बनाती ।
चूँ-चूँ को भरपेट चुगाती,
नभ में उड़ना उन्हें सिखाती ।

रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक

● गोपीचन्द श्रीनागर

● चित्र : परसाद सिंग



पर्यावरण अध्ययन

प्राणियों का उन्हीं के परिवेश में अध्ययन करने को इकोलॉजी या पर्यावरण अध्ययन कहते हैं। पौधों, पशुओं, सूक्ष्म-जीवियों के एक समूह या समुदाय को इको-तंत्र कहते हैं। प्राकृतिक इको-तंत्र प्रकृति का वह हिस्सा है जो मनुष्य की गतिविधियों से अछूता हो या जिस पर मनुष्य की गतिविधियों का प्रभाव न पड़ा हो।

जब तुम किसी प्राकृतिक परिवेश में जाओ तो कोशिश यही करो कि वहाँ के पौधों और पशुओं की स्थिति में बदलाव या उनकी गतिविधियों में बाधा न पहुँचे। जो कुछ भी तुमने वहाँ पाया हो उसका साफ-सुथरा लेखा-जोखा रखो। तथ्यों को लिखने का तरीका और कुछ उपयोगी उपकरण यहाँ दिखाए गए हैं। चलो हम भी पर्यावरण अध्ययन के कुछ तरीके जानें, कुछ करके देखें।

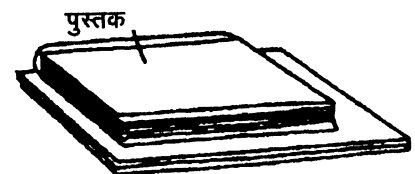
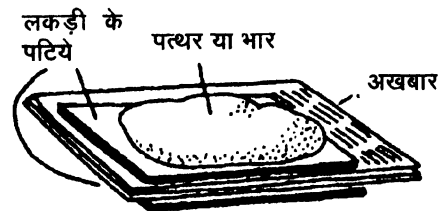
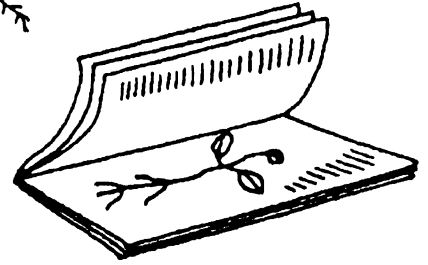
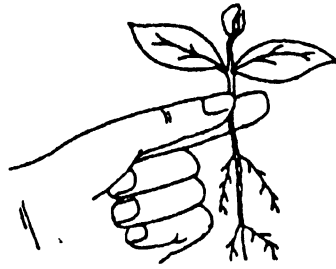
छोटे पौधों और पत्तों को एकत्र करना

आवश्यक सामान – पुराने अखबार, भारी वजन, लकड़ी के दो समतल पट्टिए

स्थानीय छोटे पौधों के नमूने इकट्ठे करो। प्रत्येक नमूने को अखबारों की तह के बीच में रखो। अब इन अखबारों को लकड़ी के दो पट्टियों के बीच में रखकर ऊपर से एक भारी वजन रख दो। जब नमूनों का पानी सूख जाए तो उन्हें एक कॉपी पर चिपका लो। चिपकाते समय ध्यान रखना कि सूखे पौधे के हिस्से टूट न जाएँ।

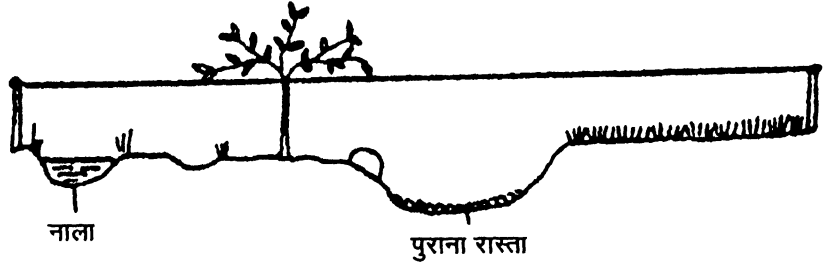
इन पौधों के स्थानीय और वैज्ञानिक नाम मालूम करो और नमूनों पर लेबिल चिपकाओ। यह तुम्हारी पौधों की हरबेरियम फाइल बन जाएगी।

इसी तरह से तुम बड़े पेड़ों के पत्तों को भी इकट्ठा करके उनकी एक अलग हरबेरियम फाइल बना सकते हो। पत्ते इकट्ठा करते समय उनकी कई खासियतों को देखते जाना। जैसे – पत्ते का आकार क्या है, उसकी नोक किस तरह की है, जहाँ उसका डंठल है वहाँ का आकर कैसा है, किनारे कटे हुए हैं या साबुत, वह छूने में चिकना है या खुरदुरा।



डोरी से सर्वेक्षण

आवश्यक सामान – एक लम्बी डोरी, दो छड़ियाँ या भारी पत्थर



इस तरीके से हम किसी भी जगह की समतलता या

ऊबड़-खाबड़पन, वहाँ मौजूद

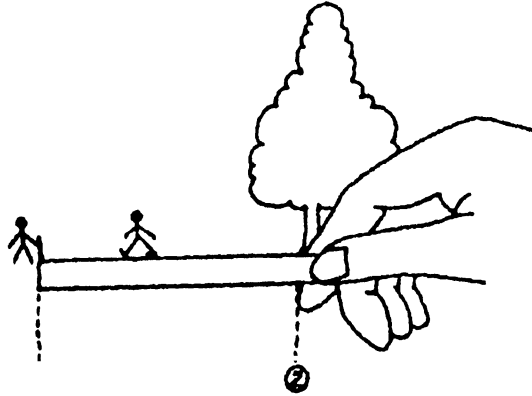
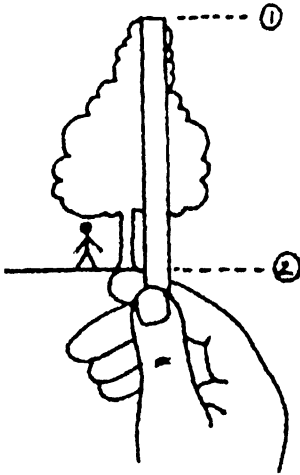
पेड़-पौधों की ऊँचाई आदि को देखेंगे। दो छड़ियों के बीच में एक डोरी को ...

बाँध दो। रस्सी से छू रहे या उसके नीचे स्थित सभी पौधों की एक सूची बनाओ।

चित्र की तरह डोरी से बनने वाली लकीरों के ऊपर-नीचे का सही अनुपात में चित्र

बनाओ। इसी तरह से बने अलग-अलग स्थानों के चित्रों की तुलना करो।

पेड़ की ऊँचाई नापना



आवश्यक सामान – एक छड़ी या एक पेंसिल और एक दोस्त

एक पेंसिल को अपनी आँख से एक हाथ की दूरी पर पकड़ो। पेंसिल के ऊपर वाले सिरे को पेड़ के ऊपरी सिरे की सीध में रखो (चित्र 1)। अब पेंसिल पर उँगलियों को नीचे सरकाकर पेड़ के नीचे वाले सिरे की सीध में ले आओ (चित्र 2)।

अब उँगलियों को उसी स्थिति में रखो और अपने हाथ को घुमाकर पेंसिल को लेटी हुई स्थिति में ले आओ। एक दोस्त को कहो कि वह पेड़ के तने के पास से आगे चलते हुए अपने कदम गिनते जाए। जैसे ही वह पेंसिल के सिरे तक पहुँचे तब तुम 'रूको' कहकर उसे वहीं रोक दो।

पेड़ की ऊँचाई अपने दोस्त के कदमों के माप में तो तुम जान ही गए। चाहो तो दोस्त की स्थिति से पेड़ के तने तक की दूरी को नाप भी लो।

पेड़ को झाड़ना

आवश्यक सामान – एक छड़ी, अखबार या सफेद चादर और छोटी चिमटी

किसी पेड़ या झाड़ी के नीचे एक बड़ा अखबार या सफेद कपड़ा बिछा दो। अब पेड़ की शाखों को एक छड़ी से इस तरह मारो कि उस पर ऊपर से चिपके कीड़े-मकोड़े नीचे टपकें पर पेड़ को कोई नुकसान न हो। अखबार या चादर पर पेड़ से गिरे कीड़े-मकोड़ों को ध्यान से देखो और उनकी सूची बनाओ। यह ध्यान रखना कि इनमें से कुछ कीड़े काट भी सकते हैं। इसलिए हाथ या उँगलियाँ न लगाना। हिलाने की जरूरत हो तो चिमटी का इस्तमाल करना ठीक रहता है। अगर तुम्हारे पास हैंडलेंस या बिल्लोरी काँच हो तो उसकी मदद से कीड़ों को बारीकी से देखकर उनके चित्र बनाओ। क्या वे किसी तरह की आवाज़ करते हैं? या कोई खास अंग किसी खास तरह से हिलाते हैं? अपनी कॉपी में सभी बातें लिख लेना।

पेड़ को झाड़ने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना कि उसमें कोई खतरनाक चीज़ जैसे मधुमक्खी का छत्ता या साँप वगैरह तो नहीं है।

छोटे कीड़े एकत्र करना

आवश्यक सामान – एक छोटी बोतल या बर्तन, मुड़ी हुई मोटी नली, रबड़ की नली, पतला/महीन कपड़ा, दो छेदों वाली रबड़ की कॉर्क

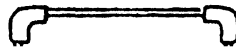
मोटी नली के सिरे को कीड़े के पास रखो। फिर रबड़ की नली में से साँस अन्दर को खींचो। कीड़ा मुड़ी नली में से होकर बोतल के अन्दर आ जाएगा। इन नलियों को प्लास्टिक की स्ट्रॉ को मोड़कर, या बॉलपेन के बाहरी खोल को गर्म करके मोड़कर बनाया जा सकता है। कीड़ा पकड़ने के बाद उसका अध्ययन करके उसे वापस वहीं छोड़ देना जहाँ से उसे पकड़ा था।



वर्गाकार नमूने

आवश्यक सामान – गत्ता या लकड़ी, तार, रबड़ की नली (वैकल्पिक)

तुम विभिन्न तरीकों से अलग-अलग आकार के वर्ग बना सकते हो। वैसे एक वर्ग मीटर का चौकोर अच्छा रहता है। तार के बने वर्ग को ज़मीन पर रखने के बाद उसके अन्दर पाए गए जीवों का नाम और वर्णन लिखो। इसी तार के चौकोर से स्कूल या घर के आसपास के अलग-अलग स्थानों का सर्वेक्षण करो और वहाँ पाई गई प्रजातियों को नोट करो। तुम चाहो तो इन चौकोर हिस्सों का लेखा-जोखा चित्र बनाकर भी रख सकते हो। तुम देखोगे कि एक ही बगीचे के कई हिस्सों में पेड़-पौधों, कीड़े-मकोड़ों के प्रकार में कितनी भिन्नताएँ या समानताएँ हैं।



26 ऐसे ही कुछ और प्रयोग सूझें तो करके देखना और हमें भी लिख भेजना।

चकमक

जनवरी, 2001

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव



अब तक तुमने पढ़ा कि मीशका हमेशा कुछ नया करना चाहता है। मुर्गी-पालन नाम की एक किताब लेकर वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। ये गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्यूबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ करते हैं। और फिर शुरुआत होती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। इसमें एक बड़ा काम था ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना। मीशका और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं और अण्डों की देखभाल करते हैं।

एक दिन उन दोनों के साथ पढ़ने वाला कोस्त्या, मीशका के घर आता है। उसे इन्क्यूबेटर के बारे में पता चल जाता है। एक दिन दोनों दोस्त स्कूल जाते समय मीशका की बहन माया से इन्क्यूबेटर की देखभाल करने को कहते हैं, यो मान जाती है। स्कूल में मीशका को इन्क्यूबेटर की चिंता होती रहती है। जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती है दोनों घर की ओर भागते हैं। घर जाकर देखते हैं सब ठीक है।

रात-रात भर जागकर इन्क्यूबेटर की देखभाल करने के कारण मीशका को हर कभी और हर कहीं नींद आ जाती थी। और, जब मीशका सो रहा होता तो कोल्या उसकी तस्वीर बनाता। सोते हुए मीशका की तस्वीर कोल्या ने अपनी कक्षा के लड़कों को दिखाई तो उन्होंने मीशका की बहुत हँसी उड़ाई। मीशका ने गुस्सा होकर कोल्या से कहा कि अब से इन्क्यूबेटर की देखभाल तुम करो। कुछ दिन कोल्या ने देखभाल की। इसी दौरान एक बार ताप बहुत नीचे चला गया। पर जल्द ही उसने ताप को सही स्थिति में पहुँचा दिया। लेकिन उसने यह बात किसी को बताई नहीं। पर उसे मन में यह ज़रूर लगता रहा कि अब अण्डों में से चूज़े नहीं निकलेंगे।

इन्क्यूबेटर पर ध्यान देने के कारण दोनों पढ़ाई नहीं कर पा रहे थे। उन्हें कम नम्बर मिलते हैं। उनकी कक्षा के सभी साथी छुट्टी के बाद इन दोनों दोस्तों को रोककर कारण पूछते हैं। तब कोस्त्या सबको बता देता है कि ये लोग इन्क्यूबेटर में लगे हैं। फिर क्या था, सभी मिलकर ताप की निगरानी करने में मदद देने को तैयार हो जाते हैं। प्रकृति प्रेमी मण्डल के सारे सदस्य इन्क्यूबेटर की देखरेख में लग जाते हैं। वे इसके लिए टाइम-टेबिल भी बनाते हैं। अब आगे

आखिरी तैयारियाँ

आखिर अब मीशका और मैं कुछ आराम कर सकते थे। सच कहें, तो इससे हमें दुख नहीं हुआ, क्योंकि इन्क्यूबेटर हमारे लिए बोज़-सा हो गया था। हम दिन-रात उसके साथ बँधे रहते थे और कहीं कुछ भूल न हो जाए, इसके डर से सारा समय उसी के सोच-विचार में रहते थे। अब, बिना हमारे सब काम सुचारु ढंग से चल रहा था।

हम प्रकृति-प्रेमी मंडल में भी अपने हिस्से का काम करने लगे। हमने दो पंछी-घर बनाए और उन्हें अपने बगीचे में टाँग दिया, स्कूल में फूल के पौधे भी लगाए। लेकिन सब से बड़ी बात यह हुई कि अब हमें सबक तैयार करने को काफी समय मिलने लगा। जब मेरी तथा मीशका की माँ ने देखा कि हमें फिर से अच्छे नंबर मिलने लगे

हैं, तो उन्हें इस बात से खुशी हुई कि लड़के इन्व्यूबेटर के काम में हमारी सहायता कर रहे हैं।

जब प्रकृति-प्रेमी मंडल की बैठक हुई, तो मारीया पेत्रोव्ना ने हमें बताया कि चूजों के पैदा होने के पहले क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए। उन्होंने हमसे कुछ घास लगाने को कहा, ताकि उन्हें खाने के लिए कुछ ताजी हरी चीज मिल सके। उन्होंने कहा कि जई बोना सबसे अच्छा है, क्योंकि वह बहुत पुष्टिकर होती है और जल्दी-जल्दी बढ़ती है।

अब बोन के लिए जई कहाँ से लाएँ?

“हमें चिड़िया-बाजार चलना चाहिए, ‘वान्या लोज्किन ने कहा। ‘वहाँ चिड़ियों के लिए सभी तरह का खाना मिलता है।”

स्कूल के बाद वान्या और जेन्या चिड़िया-बाजार गए। दो घंटे बाद वे जई से भरी हुई जेबों तथा सुनाने के लिए एक लंबी कहानी के साथ लौटे।

“चिड़िया बाजार में कहीं भी जई नहीं थी। हम सारी जगह घूमे-फिरे। जई के अलावा और सभी चीजें वहाँ थीं – पटुआ, बाजरा आदि-आदि। हमने सोचा कि हमें खाली हाथ ही लौटना पड़ेगा, लेकिन वहाँ से जाने के पहले हमने खरगोशों पर भी एक नजर डालने का फैसला किया। वहाँ हमें एक घोड़ा तोबड़े से जई खाता हुआ नजर आया। इसलिए हमने कुछ जई माँग ली।”

“किससे, घोड़े से?” चकित होकर मीशका ने पूछा।

“वाह रे पगले! घोड़े से क्यों, हमने उसके मालिक से माँगी। वह एक किसान था, जो बाजार में खरगोश लाया था। बहुत अच्छा आदमी था वह। उसने पूछा कि हमें जई किसलिए चाहिए और जब हमने बताया कि चूजों के लिए



चाहिए तो उसने कहा – ‘अरे नहीं, चूजों को जई कौन खिलाता है!’ लेकिन हमने उसे बताया कि हम जई बोकुर अंकुर निकालना चाहते हैं, तो उसने कहा कि हम चाहे जितनी जई ले सकते हैं। बस, हमने अपनी जेबें भर लीं।”

वान्या और जेन्या ने अपनी जेबों से जई निकाली। हम तुरन्त काम में लग गए। हमने दो उथली पेटियाँ बनाईं, उनको मिट्टी से भरा, ऊपर से पानी डाला और मिलाकर पतला-सा कीचड़ तैयार किया। इसके बाद हमने मिट्टी में जई डाल दी और फिर एक बार अच्छी तरह मिलाकर पेटियों को अंगीठी के नीचे रख दिया, ताकि बीज को गर्मी मिलती रहे।

मारीया पेत्रोव्ना ने हमें बताया था कि पंछियों के अण्डों की तरह पौधों के बीज भी जानदार होते हैं। बीज के भीतर जिंदगी सोई रहती है, लेकिन गरम गीली मिट्टी में जाते ही यह जीवन जाग जाता है और बीज बढ़ने लगते हैं। सभी जानदार चीजों की तरह बीज भी मर सकते हैं और मरे हुए बीज नहीं उगते।

हमें इस बात का बड़ा डर था कि कहीं हमारे बीज

“मरे हुए” ही न हों। इसलिए हम बार-बार पेटियों में झाँकते रहते थे कि वे उग रहे हैं या नहीं। दो दिन बीत गए, फिर भी कुछ नहीं हुआ। तीसरे दिन हमने देखा कि पेटियों की मिट्टी यहाँ-वहाँ तड़क गई है और कहीं-कहीं वह उभर भी आई है।

“यह क्या है?” मीशका ने आश्चर्य से पूछा। “पेटियों को जरूर किसी ने हाथ लगाया है!”

“ऐसी कोई बात नहीं है,” ल्योशा कूरोचिकन ने उत्तर दिया, जो उस दिन सेन्या बोब्रोव के साथ ड्यूटी पर था।

“फिर यह मिट्टी इस तरह टूट-फूट क्यों गई है?” मीशका चिल्लाया। “बीजों को देखने के लिए तुम्हीं ने अपनी उँगलियों से उसे कुरेदा होगा।”

“नहीं, हमने ऐसा कुछ नहीं किया!” सेन्या ने जवाब दिया।

मैंने मिट्टी का एक ढेला उठाया और उसके नीचे बीज को टटोलने लगा। वह फूलकर खुल गया था और उसके सिरे पर एक नन्हा-सा सफेद अंकुर था। मीशका ने भी एक बीज उठा लिया और देर तक उसको देखता रहा।

“अब मैं समझा क्या बात है!” वह चिल्लाया। “इन्होंने मिट्टी को खुद ही कुरेदा है।”

“किन्होंने?”

“बीजों ने, और किसने! वे जाग गए हैं और अब मिट्टी में से अपना रास्ता निकाल रहे हैं। देखो, मिट्टी किस तरह फूल गई है। मिट्टी में उनके लिए और जगह नहीं बच रही है।”

बीज कैसे उग रहे हैं, यह दिखाने के लिए मीशका लड़कों को बुलाने दौड़ा। ल्योशा ने, सेन्या ने और मैंने मिट्टी में से कुछ और बीज निकाल लिए। इन सब में से अंकुर निकलने लगे थे। जल्दी ही लड़कों ने आकर चारों तरफ भीड़ लगा दी। हर कोई बीज देखना चाहता था।

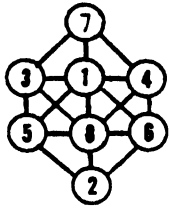
“देखो,” वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, “बीज फूट रहे हैं और जिस तरह अण्डों में से बच्चे निकलते हैं, उसी तरह से जई निकल रही है।”

“बिल्कुल ठीक,” मीशका बोला। “जई भी जानदार चीज़ ही है, फर्क इतना है कि वह उगती है और एक ही जगह पर रहती है, लेकिन जब अण्डों में से हमारे चूजे निकलेंगे, तो वे इधर-उधर दौड़ेंगे, किकियाते रहेंगे और कुछ खाने को चाहेंगे। वाह, कितना खुश होगा हमारा प्यारा परिवार!”

(अगले अंक में जारी)

सभी चित्र : सौरभ दास

दिसम्बर 2000 के माथापच्ची के हल



3. आठ के बाद 32 आएगा।
4. 40 मीटर प्रति सेकण्ड।
5. ये मेरा बेटा है।
6. महाराज, सदाबहार, पलक, समानता, हिचकिचाहट, ...।
ऐसे कई और शब्द मौजूद हैं।
7. अगर नापकर देखोगे तो पता चलेगा कि तीनों हाथी बराबर नाप के हैं और तीनों जिराफ भी। फिर भी ये छोटे-बड़े दिखते हैं क्योंकि यहाँ चित्र का बाकी माहौल ऐसा बनाया गया है कि हमें दृष्टिभ्रम हो जाता है।
8. ऐसे बनेगा पिरामिड -



वर्ग
पहेली

112

का हल

शि	क्ष	क				भा	र	त
खा		म	न		ख	त		न
			क	ठि	न			
क	र	त	ल		क	त	र	न
मी		ला				मं		म
ज	ला	श	य		अ	चा	न	क
			म	न	का			
ना		दि	न		ल	ठ		मो
ग	ठि	या				स	मी	र

सही हल भेजने वाले पाठक हैं - आकांक्षा शर्मा, आगरा, उ.प्र.। योगिता अमोल्या, खण्डवा; चम्पालाल कुशवाह, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद; सोहित अग्रवाल, नौगाँव, छतरपुर; अनीश दुबे व श्वेता पँवार, इंदौर; ऋषिका शाही, भोपाल; विद्या मिश्र, जबलपुर; खुरशीद अनवर राही, जावद, नीमच; सभी म.प्र.। अलिन्द उपाध्याय, काशीपुर; मनु पाण्डे, जाखनदेवी, अल्मोड़ा; उत्तरांचल। स्मिता मुखजी व अविनाश वाचस्पति; दिल्ली। इन्हें जनवरी, 2001 का अंक भेजा जा रहा है।

29

चकमक

जनवरी, 2001

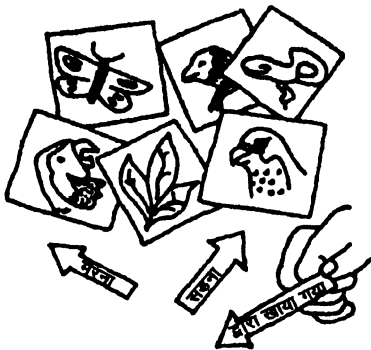
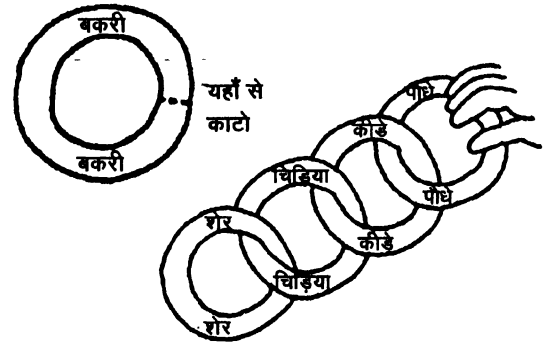


प्रकृति का सन्तुलन

सभी जीवित प्राणी अंततः सूर्य पर निर्भर रहते हैं। उत्पादक (पौधे) प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा सूर्य की ऊर्जा को सोख लेते हैं। इन पौधों की पत्तियों को प्राथमिक उपभोक्ता (शाकाहारी जीव) खाते हैं। फिर इन जीवों को द्वितीयक उपभोक्ता (माँसाहारी) खाते हैं। जो कि अन्त में तीसरे दर्जे के उपभोक्ता (अन्य माँसाहारी जीवों) द्वारा खाए जा सकते हैं। उत्पादक और उपभोक्ता के बीच के जटिल सम्बंधों को भोजन चक्र (फूड चेन) या भोजन जाल (फूड वेब) द्वारा दर्शाया जा सकता है। किसी विशेष परिवेश में रहने वाले पौधे और जीव अपने आपको उसी परिवेश के अनुकूल ढाल लेते हैं। व्यवहार में इस प्रकार बदलाव करने से वे जिंदा रह पाते हैं। प्राकृतिक जगत में सभी पदार्थ बार-बार दुबारा इस्तेमाल में लाए (रीसाइकिल किए) जाते हैं। परन्तु मनुष्य की गतिविधियाँ प्रकृति के संतुलन को गड़बड़ा रहीं हैं और इसके दूरगामी प्रभाव काफी भयानक हो सकते हैं।

भोजन क्रम की लटकन

इसके लिए सख्त गत्ता, कैंची लो।
सख्त गत्ते की शीट में से भोजन-क्रम के छल्लों को काटो।
हरेक छल्ले में भोजन-क्रम की एक कड़ी का नाम लिखो।
सब छल्लों को आपस में जोड़कर एक लम्बी लड़ (चेन) बनाओ।
सरल और जटिल, दोनों प्रकार की चेन बना सकते हो।



भोजन के जाल

इसके लिए आवश्यक सामान है कार्ड। पशुओं और पौधों के चित्र कार्ड पर बनाओ या फिर उनके चित्रों को किसी पत्रिका में से काटकर चिपका लो। फिर कार्ड के ही तीर बनाओ और उन पर चित्र में बने सम्बंधों को लिखो। अब कार्ड पर बने चित्रों और तीरों को सजाकर भोजन जाल बनाओ। इस गतिविधि को बढ़ाकर कई लोगों के लिए एक ताश के खेल का रूप भी दिया जा सकता है।

दादी अम्माँ मान जाओ

इस बार का यह गीत छेड़छाड़ और मान-मनौबल से भरा है। इसे सन् 1961 में बनी फिल्म 'घराना' में सास के रोल के लिए मशहूर ललिता पवार पर फिल्माया गया था। जब वे अपने नाती-नातिन और बेटे-बहू से रूठ जाती हैं, तो बच्चे मनाने के लिए यह गीत गाते हैं।

दादी अम्माँ दादी अम्माँ मान जाओ
छोड़ो जी ये गुस्सा ज़रा हँस के दिखाओ
दादी अम्माँ दादी अम्माँ मान जाओ

छोटी-छोटी बातों पे न बिगड़ा करो
गुस्सा हो तो ठण्डा पानी पी लिया करो
खाली-पील्मी अपना कलेजा न जलाओ
दादी अम्माँ दादी अम्माँ मान जाओ
छोड़ो जी ये गुस्सा...



दादी तुम्हें हम तो मना के रहेंगे
खाना अपने हाथों से खिलाके रहेंगे
चाहे हमें मारो, चाहे धमकाओ
दादी अम्माँ दादी अम्माँ मान जाओ
छोड़ो जी ये गुस्सा...

कहो तो तुम्हारी हम चम्पी कर दें
पियो तो तुम्हारे लिए हुक्का भर दें
हँसी न छुपाओ, जरा आँखें तो मिलाओ
दादी अम्माँ दादी अम्माँ मान जाओ
छोड़ो जी ये गुस्सा...

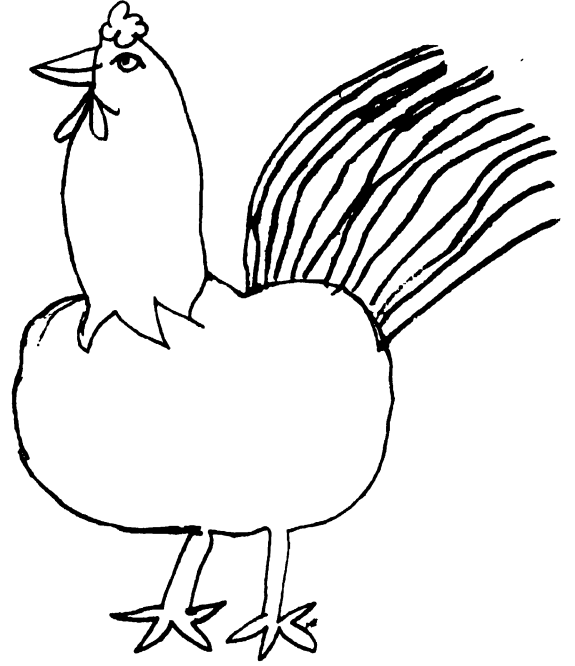
हमसे जो भूल हुई माफ करो माँ
गले लग जाओ दिल साफ करो माँ
अच्छी-सी कहानी कोई हमको सुनाओ
दादी अम्माँ दादी अम्माँ मान जाओ
छोड़ो जी ये गुस्सा.....

फिल्म : घराना
गीतकार : शकील बदायूनी
संगीतकार : रवि
गायक : आशा भोंसले तथा साथी



प्रातः

मुर्गे ने जब बाँग दी
बच्चों की तब नींद खुली
सूरज मामा चले सफर पर
चंदा जी घर लौट चले
चिड़ियों ने है बीन बजाई
पत्तियों ने तब कत्थक की
दूब पर है बूँद ओस की
मंद समीर भी झूम उठी
धीरे-से अलसाए कुहरे
आलस छोड़ खड़े हुए
लोगों की भी सोई दुनिया
धीरे-धीरे जाग उठी



● शिउली, आठवीं, केसला, होशंगाबाद, म.प्र.

● रोहित अग्रवाल, दूसरी, सारणी, म.प्र.

मेरा अनुभव

जब मैं छोटा था तब हमारे साथ बहुत बुरी घटना हुई। मेरे नाना जी जो बम्बई में रहते थे, उनकी अचानक तबीयत खराब हो गई। 3-4 दिन हॉस्पिटल में रहने के बाद उन्हें घर लाया गया। उसके दूसरे दिन 4-5 बजे उनका देहान्त हो गया। जब हमारे घर फोन आया तब मेरी मम्मी बम्बई जाने के लिए तैयार हुई। जब मम्मी बस स्टैण्ड पर पहुँची तो वहाँ पर वह बस चली गई थी। फिर मम्मी ने ट्रेन में जाना ठीक समझा। जब मम्मी ट्रेन से भोपाल पहुँची तो मेरे बड़े भाई को प्यास लगी और वह वहाँ से उतरकर एक प्याऊ पर चला गया। जब मेरी मम्मी को पता चला कि मेरा बड़ा भाई उनके साथ नहीं है तब मेरी मम्मी उसे इधर-उधर ढूँढने लगी। जब मेरी मम्मी उस प्याऊ के पास पहुँची तब मेरे भैया मम्मी के साथ फिर से हो गए।

जब ट्रेन वहाँ पहुँची तब वहाँ मालूम पड़ा कि उधर दंगे हो रहे थे। हिन्दु-मुस्लिम एक दूसरे के दुश्मन हो रहे थे। जब मेरी मम्मी वहाँ पहुँची तो मालूम पड़ा कि नाना जी को श्मशान घाट ले जाया गया है। तब मेरी मम्मी फूट फूटकर रोने लगी। मेरे नानाजी की तेरहवीं भोज के तीन-चार दिन बाद हम वहाँ से चल दिए। देवास तक हम बम्बई से बिना किसी कठिनाई के पहुँच गए।

अपनी बात

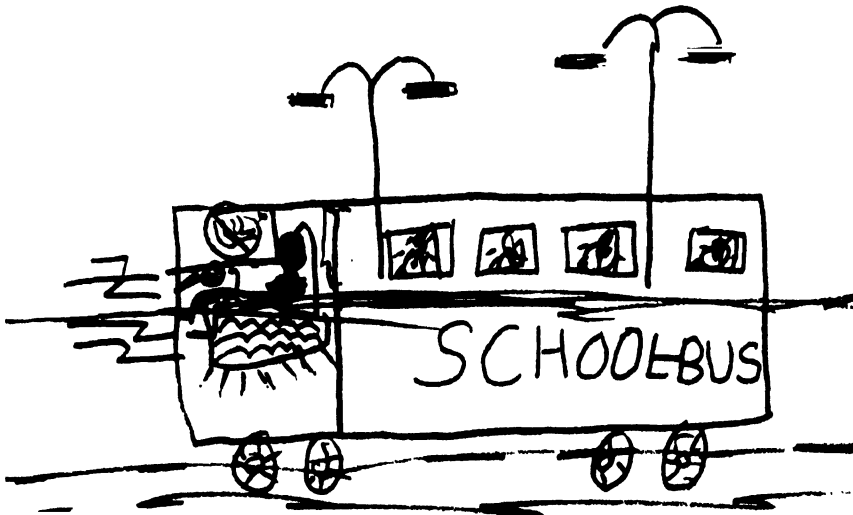


हर साल की तरह इस साल भी गर्मियों की छुट्टियों में हम विदिशा एवं अन्जड़ रहने के लिए गए। पहले मैं विदिशा गई। वहाँ हमने बहुत सी बातें की। एक दिन हम फिल्म देखने गए। हम लोग पार्क भी गए। ये डेढ़ महीना किस तरह गुजर गया, कुछ पता ही नहीं चला। ऐसा लगा जैसे मैं कल आई और आज जा रही हूँ। एक बार ऐसा तो लगा कि कुछ दिन और वहीं पर रूक जाऊँ, पर ऐसा नहीं हुआ।

जिस दिन मैं विदिशा से आई उसके दूसरे ही दिन हम अन्जड़ चले गए। वहाँ पर भी हमने बहुत मस्ती की। बहुत सारी बातें कीं, बहुत से खेल खेले और एक-दूसरे से थोड़ी सी तू-तू-मैं-मैं भी की। पर यह सब करने के बाद इतना जरूर पता चला कि जितना मजा साथ-साथ रहने और मस्ती करने में है उतना मजा लड़ाई करने में कहाँ। इसी तरह यह एक महीना भी कैसे गुजर गया कुछ पता नहीं चला। ढाई महीने अपने घर से दूर रहने के बाद यहाँ पर आने पर ऐसा लगा जैसे स्वर्ग में पहुँच गए हों।

भाई-बहिनों के साथ बहुत प्यारी-प्यारी बातें कीं, टाफियाँ खाई और बहुत मजे किए। उसके बाद स्कूल खुलने का दिन आ गया। 3 जुलाई को हमारे स्कूल खुल गए। पहले दिन ऐसा लगा कि स्कूल नहीं जाएँ। लेकिन दूसरे दिन स्कूल आना पड़ा। पढ़-लिखकर बड़े होकर कुछ बनना है इसलिए स्कूल आना भी बहुत जरूरी है। खेल के साथ-साथ पढ़ाई में भी बहुत मजा आता है।

● पूजा गर्ग, नौवीं, देवास, म.प्र.



आधार श्रीवास्तव, दूसरी, गंज आँवला, बरेली, उ.प्र.

चकमक

जनवरी, 2001

मैं डूबा

एक दिन जब मैं घूम रहा था तब मेरे कुछ साथियों ने आकर कहा, "चल यार संजय, आज नदी पर नहाने चल।"

मैंने कहा, "मुझे तैरना तो आता नहीं।"

उन्होंने कहा, "कोई बात नहीं। हम सिखा देंगे।"

जब मैं नदी पर पहुँचा तो पानी अधिक था इसलिए मैं दूर नहाने लगा। मेरा दोस्त कहने लगा, "यार संजय तू इतना डरता है।" मैंने कहा कि मुझे तैरना नहीं आता। तो उसने कहा, "तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें पूरा तलाब घुमा दूँगा।"

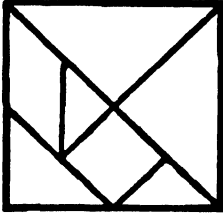
उसने मुझे गिरा दिया और मैं हाथ-पाँव मारने लगा। मेरे मुँह में पानी भर गया और मैं बेहोश हो गया। मेरे दोस्तों ने मुझे पानी से बाहर निकाला और मेरे पेट पर जोर से वजन दिया। उससे मेरे मुँह से पूरा पानी निकल गया। उस दिन से आज तक मैं गहरे पानी से डरता हूँ। शायद कभी मुझे तैरना आ सके।

● संजय कुमार कसारे, आठवीं,

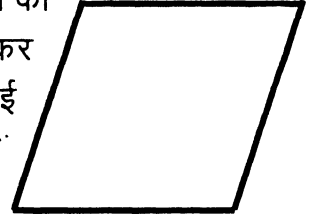
बिलासपुर, म.प्र. 33



(1)



इस आकृति को देखो । ये है टेनग्राम । कहते हैं यह चीन की देन है । गिनोगे तो पाओगे कि यह सात हिस्सों से मिलकर बना है । इन हिस्सों को अलग-अलग ढंग से जमाकर कई आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं । अच्छा क्या इनसे समांतर चतुर्भुज भी बनाया जा सकता है ?



(2)

चलो देखते हैं ये सवालीराम जी क्या कर रहे हैं । लगता है ये कोई तालिका बना रहे हैं ।

अरे हाँ, यह तो उनकी पेड़-पौधों की तालिका है । वे हर सप्ताह एक पेड़ लगाते हैं । यानी एक महीने में चार पेड़ । लेकिन जो भी पेड़ लगाते हैं उसमें नीचे दी बातों में से कम से कम दो खासियतें जरूर होती हैं - वह छायादार हो, फलदार हो, साल भर हरा-भरा रहता हो, उसमें फूल लगते हों । पिछले महीने वे जामुन, नीम, गुलमोहर और सेमल का पेड़ लगा चुके हैं । अब वे अगले दो महीनों का टाईमटेबल बना रहे हैं ।

क्या तुम इनके लिए अगले दो महीनों का चार्ट बना सकते हो ?

(3)

चलो मैं तुमसे एक कंचे की शर्त लगाता हूँ कि यदि तुम मुझे दो कंचे दो तो मैं इसके बदले तुम्हें तीन कंचे दूँगा । लगी शर्त !

क्या तुम यह शर्त जीतना चाहोगे ?

(4)

अब कुछ गुणा भाग कर लिया जाए ।

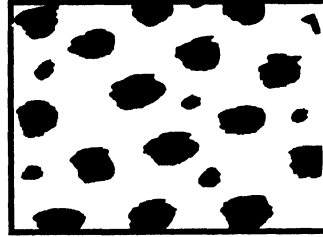
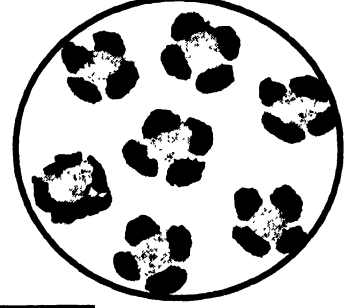
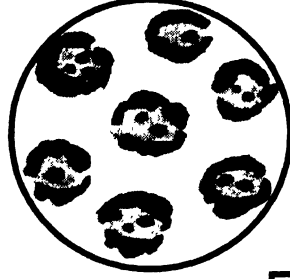
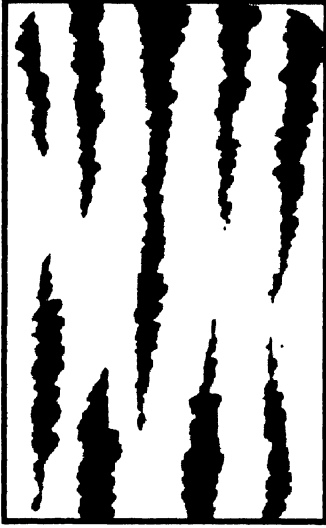
$$51249876 \times 3 = 153749628$$

$$16583742 \times 9 = 149253678$$

जरा जाँचो तो क्या दोनों समीकरण सही हैं ? इन समीकरणों में एक खास बात यह है कि इनमें दोनों तरफ एक से लेकर नौ तक के सब अंक हैं । है न ! क्या तुम आठ अंकों की ही एक और संख्या ढूँढ सकते हो, जिसे छह से गुणा करने पर ऊपर जैसा ही एक और समीकरण बनाया जा सके ?

(5)

क्या तुम यहाँ दिए अलग-अलग तरह के इन जानवरों के धब्बों को पहचान सकते हो? चलो हम ही बता देते हैं - ये चारों बिल्ली प्रजाति के हैं और इनके नाम हैं - बाघ, तेंदुआ, चीता और जंगली बिल्ली। अब तुम बताओ कि कौन-सा धब्बा किसका है?



(6)

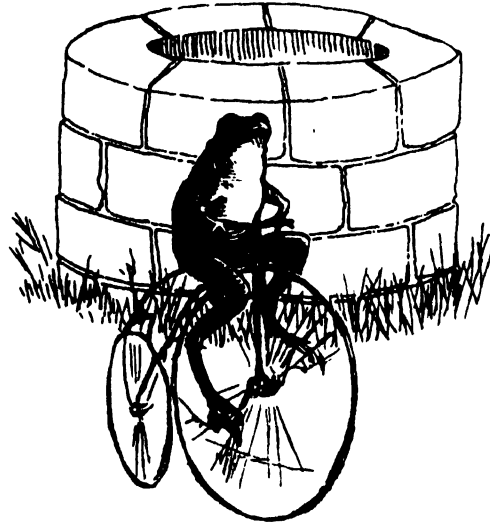
नामक, मकान, मनोनयन, पगला, कमतर

क्या खासियत है इन शब्दों में? ठीक कहा। इन सभी में हमारा कोई न कोई अंग छुपा है। नामक में नाक, मकान में कान आदि।

क्या तुम सिर्फ पाँच मिनट में ऐसे दो और शब्द ढूँढ सकते हो?

(7)

इन मेंढक जी को खेल के मैदान में जल्दी पहुँचना था। तो इन्होंने सोचा कि क्यों न साइकिल से चला जाए। साइकिल में बाकी सब तो ठीक था, बस ब्रेक कुछ गड़बड़ थे। और, रास्ते में ये साइकिल सहित कुँए में गिर गए। कुँआ दस फुट गहरा था। दिन भर में मुश्किल से तीन फुट ऊपर चढ़ते मगर रात में दो फुट नीचे खिसक जाते। आखिर में एक दिन वे कुँए से बाहर आ ही गए। तुम बता सकते हो कि कितने दिन बाद?



खेल



दुनिया भर के

इस बार



साइकिल! इस छोटे से दुपहिए में कई खासियत हैं। इसे चलाने के लिए न तो आपको पेट्रोल, डीजल की जरूरत होती है न ही यह बहुत महंगा वाहन है। हाँ, इसे चलाने के लिए थोड़ी सी शक्ति

की जरूरत होती है, इसलिए अनजाने ही हमारा अच्छा व्यायाम भी हो जाता है। कई लोग तो सुबह-सुबह व्यायाम भी साइकिल चलाकर करते हैं। स्कूल आते-जाते यार-दोस्तों के संग साइकिल दौड़ तो अक्सर होती ही होगी!



यही साइकिल दौड़ एक खेल भी है। खेल भी ऐसा, जिसकी प्रतियोगिताएँ गाँव से लेकर, ओलम्पिक तक में होती हैं। साइकिल रेस प्रतियोगिता शुरुआती आधुनिक ओलम्पिक खेलों में भी शामिल थी।

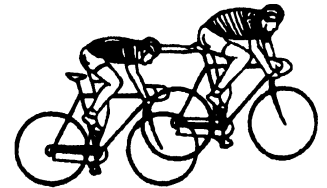
इतिहास

चलो ज़रा साइक्लिंग के इतिहास में झाँकें। एक खेल के रूप में साइक्लिंग या साइकिल रेस कब शुरु हुई इसके बारे में अनुमान लगाया जाता है कि 31 मई, सन 1868 में पेरिस में ऐसी पहली प्रतियोगिता हुई थी। यह साइक्लिंग 1200 मीटर की दूरी की थी। प्रतियोगिता जीतने वाले

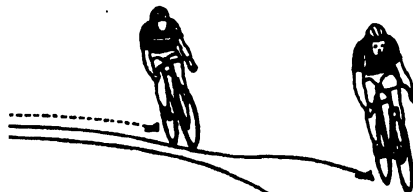
पहले व्यक्ति का नाम था जेम्स मूर। अगले ही साल यानी 1869 में साइकिल रेस की बड़ी प्रतियोगिता हुई। इसका नाम था, 'कस्बे से कस्बे तक' की साइकिल रेस। पहली इस तरह की रेस हुई फ्रांस के दो शहरों रोन और पेरिस के बीच। इन दो शहरों के बीच की दूरी 133.57 किलोमीटर थी।

पूरे यूरोप में उन दिनों साइकिल रेस खूब लोकप्रिय हुई। इंग्लैण्ड की सड़कें इतनी अच्छी नहीं थीं कि उन पर साइकिल रेस हो सके। इसलिए ऐसी साइकिल रेसों के लिए वहाँ अलग से ट्रेक्स तैयार किए गए। और यहीं से शुरु हुआ साइकिल रेसों के लिए अलग मैदान या पट्टियाँ बनाने का काम।

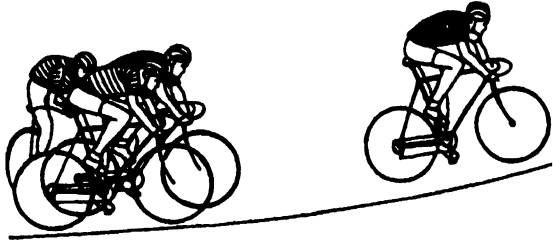
साइकिल रेस के लोकप्रिय होने से 1878 में नेशनल साइक्लिस्ट यूनियन बनी। और फिर 1892 में अंतर्राष्ट्रीय साइक्लिस्ट एसोसिएशन बनी।



गलत सवारी : दूसरे को धक्का देना



दूसरे को रोकने के लिए उसके आगे से निकलना



सबसे पहले इस एसोसिएशन के सदस्य थे इंग्लैण्ड, बेल्जियम, डेनमार्क, जर्मनी, फ्रांस, नीदरलैण्ड, अमेरिका। ज्यों-ज्यों साइकिल रेस लोकप्रिय होती गई इसका फैलाव बढ़ता गया। देश-देश में इसकी राष्ट्रीय यूनियनें बनने लगीं। फिर अंतर्राष्ट्रीय साइकिलस्ट एसोसिएशन की जगह ज़्यादा प्रभावी संस्था बनी जिसका नाम यूनियन साइकिलस्ट इंटरनेशनल था।

फिर शौकिया साइकिल रेस और पेशेवर साइकिल रेस की अलग-अलग प्रतियोगिताएँ होने लगीं। लोकप्रियता बढ़ने से प्रतियोगिताओं की संख्या भी बढ़ गई। साइकिल रेसों के रूप में भी परिवर्तन आने लगे। तरह-तरह की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाने लगीं। एकल साइकिल रेस, टीम साइकिल रेस, और तो और एक ही साइकिल पर छै-छै लोग सवार होते और फिर रेस होती।

इंग्लैण्ड में 1878 में एक और अनोखी रेस शुरू हुई। एक-दो घंटे की नहीं... बल्कि पूरे छै दिनों की। इस छै दिनी रेस के लिए जगह-जगह पर खाने-पीने के केंद्र होते थे। यूरोप से शुरू हुई यह रेस आखिर में हज़ारों किलोमीटर दूर ऑस्ट्रेलिया तक पहुँची।

वहाँ भी खूब लोकप्रिय हुई। खूब फलने-फूलने के बाद 1960 के दशक से इसकी लोकप्रियता में कुछ कमी आई। पेट्रोल व डीज़ल से चलने वाले दुपहिए ज्यों-ज्यों चलन में आए त्यों-त्यों साइकिल रेस के प्रतियोगी और दर्शक कम होते गए।

लेकिन इस सबके बावजूद साइक्लिंग की

आज भी बड़ी-बड़ी प्रतियोगिताएँ होती हैं। आज भी लोग इन प्रतियोगिताओं को जीतने के लिए महीनों-सालों अभ्यास करते हैं।

साइक्लिंग के नियम

एक नजर साइक्लिंग के नियमों पर। ये नियम अन्य खेलों के नियमों की तरह जटिल नहीं हैं। कुछ खास पहलुओं पर हम बात करते हैं। शुरुआत करते हैं पोशाक से।

प्रतियोगी को निकर यानी हाफपैट और पूरी बाहों की जर्सी पहनना होता है चाहे ये दोनों जुड़े हुए यानी वनपीस भी हो सकते हैं। सिर पर हेलमेट लगाना ज़रूरी होता है। प्रतियोगी चाहे तो जुराबें और दस्ताने पहन सकता है।

रोडरेसिंग के लिए साइकिल किसी भी बनावट की हो सकती है, बस वह व्यक्ति की शारीरिक शक्ति से ही चलने वाली होना चाहिए। साथ ही वह निर्धारित मापदण्ड से अधिक ऊँची भी न हो।

साइक्लिंग ट्रेक पर आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिता के नियम थोड़े फर्क होते हैं। इस रेस में गियर वाली साइकिल का उपयोग नहीं किया जा सकता। साइकिल में लाइट या रिफ्लेक्टर होना ज़रूरी होता है। क्योंकि ये प्रतियोगिताएँ रात में भी आयोजित होती हैं।

इन रेसों की शुरुआत झण्डा गिराकर की जाती है। रेस की शुरुआती रेखा से लेकर समाप्ति रेखा तक की दूरी प्रतियोगियों ने कितने समय में पूरी की है, यही उनका प्रदर्शन होता है।

कोई भी प्रतियोगी जो साइकिल से उतर गया हो साइकिल खींचकर, साइकिल पर बिना सवारी किए पैडल



मारकर भी समाप्ति रेखा तक पहुँच सकता है।

हाँ, एक बात, जिस देश में रेस हो रही है उस देश के ट्रेफिक नियम जानना भी ज़रूरी होता है। क्योंकि उस देश में होने वाली रेस में वही ट्रेफिक नियम मान्य होते हैं।

एकल साइकिल रेस प्रतियोगिता को छोड़कर अन्य लगभग सभी प्रतियोगिताओं में दो प्रतियोगी गति बढ़ाने में एक-दूसरे की मदद भी कर सकते हैं। वे चाहें तो आपस में अपनी साइकिल भी बदल सकते हैं।

आजकल कई तरह की साइकिल रेस होती हैं जिनके अपने अलग-अलग नियम होते हैं। जैसे स्प्रिंट रेस दो या कभी-कभी दो से अधिक प्रतियोगियों के बीच होती है। यह रेस 1000 मीटर तक की दूरी की होती है। हाँ लेकिन प्रतियोगी का प्रदर्शन अंतिम दो सौ मीटर के दौरान उसकी गति से माना जाता है। ऐसे ही हैंडिकेप रेसिंग में प्रतियोगी को धक्का देकर रेस शुरू की जाती है।

स्क्रेच रेस भी अनोखी साइकिल रेस है। इसमें सभी प्रतियोगी एक साथ शुरुआत करते हैं। एक निश्चित रेखा के बाद सबसे पीछे रहने वाले खिलाड़ी को बाहर कर दिया जाता है। यह रेस तब तक चलती रहती है जब तक कि एक से ज्यादा

प्रतियोगी बचें। जो आखिर में बचता है वही रेस का विजेता होता है।



एक ऐसी साइकिल रेस भी होती है जिसमें साइकिल सवार को एक सहायक मिलता है। इसमें उसे साइकिल रोलर पर चलानी पड़ती है। दरअसल होता यह है कि साइकिल का पिछला पहिया दो रोलर के ऊपर टिका रहता है और आगे के पहिए के नीचे भी एक रोलर होता है। रोलर कितना घूमा इसका निर्णय रोलर पर लगे डायल से होता है।

इनके अलावा भी कई साइकिल रेसें होती हैं, सब बिल्कुल फर्क, अलग-अलग नियमों वाली और अजूबी भी।

यदि तुम्हें भी साइकिल दौड़ का चैंपियन बनना है तो अभ्यास शुरू कर दो। लेकिन यह अभ्यास स्कूल के रास्ते में मत करने लगाना। इसके लिए सबसे अच्छी जगह तो खेल के बड़े मैदान हैं।



रोलर रेस

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ल

पहेलियाँ

पैर नहीं पर चलती हूँ
रंग-बिरंगी होती हूँ
सस्ते में मिल जाती हूँ
लेकिन रखर से डरती हूँ

साँपों से भरी एक पिटारी
सबके मुँह में है चिंगारी
जोड़े हाथ तो निकले घर से
फिर घर पर वह सिर दे पटके

● मुरलीधर वैष्णव, सातवीं, नान्दनवाड़ा, राजस्थान

एक उपहार योजना



चकमक

के सदस्य बनाने में मदद करें।

आप तो चकमक पढ़ते ही हैं,

आप जानते हैं कि चकमक में क्या-क्या होता है।

आप अपने परिचितों को,

मित्रों को चकमक के बारे में बताएँ

और उन्हें चकमक का सदस्य बनाएँ।

1 मार्च, 2001 तक पाँच सदस्य बनाकर

उनके पते और चंदे की राशि

हमारे पास भेजें। हम आपको

देंगे चकमक की एक साल

की सदस्यता का उपहार।



यहाँ से काट लें

सदस्यता फॉर्म

चकमक

मुझ/हम जन्म पत्र पर माह

से चकमक भेजना शुरू करें -

नाम

मोहल्ला

डाकघर

ज़िला

पिन

सदस्यता शुल्क
से भेज रहे हैं।

छह माह	एक साल	दो साल	तीन साल	आजीवन
50.00	100.00	180.00	250.00	1000.00

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक

• जो लागू हो उस पर सही (✓) का निशान लगाएँ।

ड्राफ्ट/चेक एकलव्य के नाम में बनवाकर इस पत्र पर भेजें -

एकलव्य ई-1/25 अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

फोन : 463380

नाम एवं हस्ताक्षर

चकमक अगस्त, 2000 का अंक देखकर बचपन की प्राथमिक शिक्षा की याद तरोताजा हो गई। मैंने बचपन में कक्षा 5 में बादलों के प्रकारों में पढ़ा था कि ये 3 प्रकार के होते हैं – वर्षा मेघ, तहदार और घुड़पुच्छ।

चकमक में यही सब बरसों बाद पढ़ा, मजा आ गया। मुखपृष्ठ काफी आकर्षक लगा। भीतरी पृष्ठ पर छपे बादलों के चित्र आकर्षक लगे। ज्यादा अच्छा होता इन्हें ऊपर से नीचे क्रम के बजाए बाएँ से दाएँ छापा जाता तो बादलों के उठने, घनीभूत होने, फैलने और बरसने का विज्ञान आसानी से समझ पाते। तात्पर्य यह है कि ऐसे तुलनात्मक चित्रों को एक तल पर छापा जाए तो समझने में बच्चों को आसानी होती है।

इसी से सम्बंधित लेख 'तरह-तरह के बादल' में बादल की ऊँचाई 20,000 से 60,000 फीट की

बताई है। कहीं अधिक बेहतर होता कि इसे मीटर में बदलकर लिखा जाता तो समझ आसानी से बनती कि ये.... मीटर या ... कि.मी. ऊँचाई पर हैं। बच्चों को मीटर की इकाई में ही आजकल पढ़ाया समझाया जाता है।

इसी तरह वॉलीबॉल वाले लेख में मैदान के चित्र में साइज लिखा होता तो ज्यादा बेहतर होता। चित्र में गढ़े नेट के खम्भे मैदान की ठीक (लम्बी) लाइन के ऊपर (मध्य में) गढ़े होते हैं जो नहीं है। इस लेख में 4 इकाइयों का उल्लेख है, से.मी., फीट, इंच, मीटर। नेट का साइज मीटर में है जबकि खम्भों की ऊँचाई 4 फीट एवं 8 इंच दर्शाई है, जो त्रुटिपूर्ण है।

गुरुजी के निधन का समाचार पढ़कर गहरा दुख हुआ। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके सहज तरीकों को जीवंत रखकर बच्चों तक पहुँचाया जावे।

गीत-संगीत की कड़ी ने मन के तारों को झंकृत कर दिया। आज इन गीतों के बोल बच्चों तक सीधे पहुँच गए। बच्चे ऐसे गीतों का अच्छा संग्रह बना सकेंगे। अच्छा होगा इस कड़ी के समाप्त होने पर एक छोटी पुस्तिका के रूप में भी प्रकाशित किया जावे।

चकमक के नए आकर्षक स्वरूप के लिए चकमक परिवार को हार्दिक बधाई, बहुत-बहुत प्यार।

● उमेश चौहान, टिमरनी, हरदा, म.प्र.

मैंने मेरे स्कूल के बाल दिवस पर लगे बाल मेले में ये चकमक का अंक खरीदा। ये मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं भी इसमें अपनी चित्र, कविता, कहानी, छपवाना चाहता हूँ। पर ये मुझे मिलेगी कैसे? मेरे मम्मी-पापा पैसे जमा नहीं करने देंगे। कृपया मुझे पत्र द्वारा जवाब जल्दी दें।

● अजय चौधरी, ढावाखुर्द, होशंगाबाद

..... यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनने आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

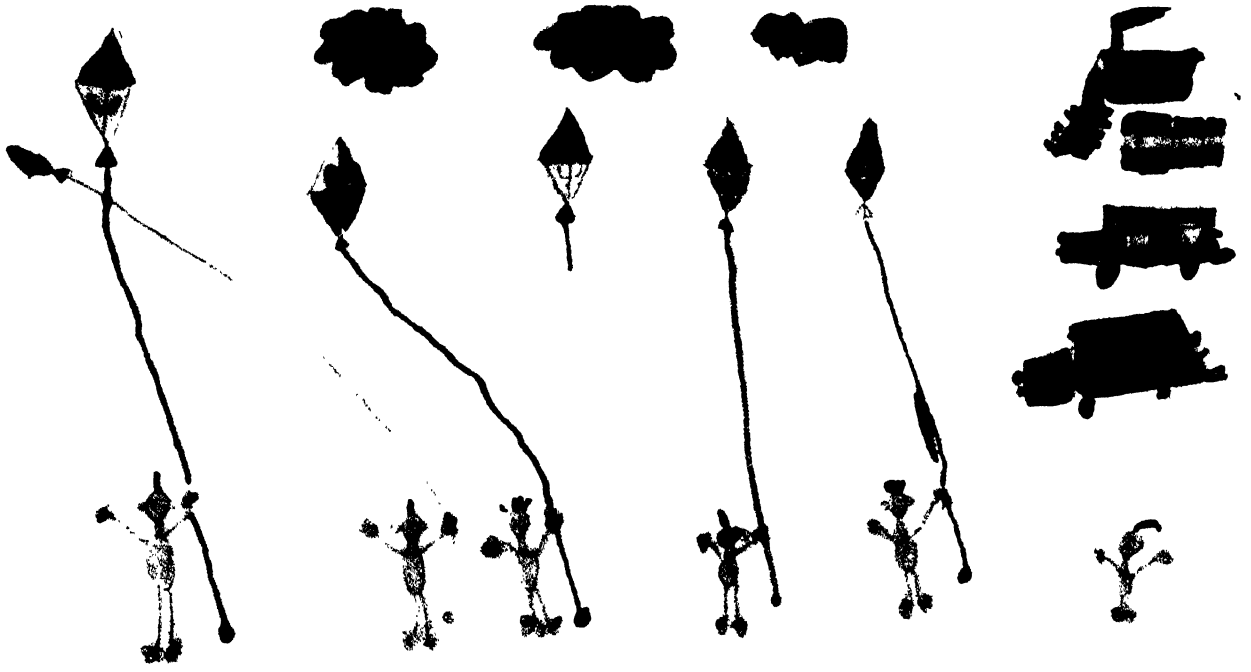
नाम

मोहल्ला

डाकघर

ज़िला

पिन



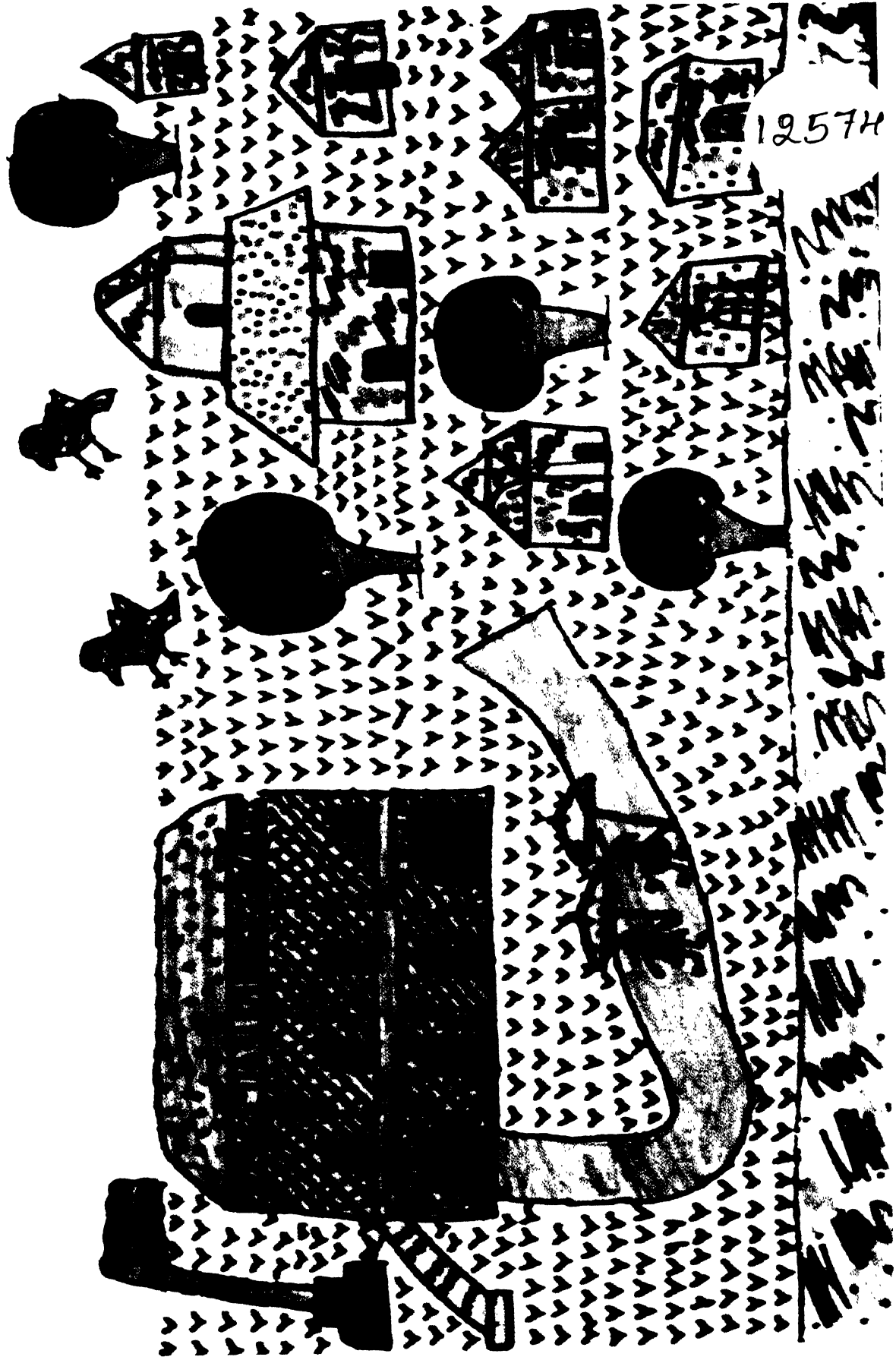
● सुखराम, तीसरी, खन्ना, पंजाब



● जेबुन्निसा, 12 वर्ष, भोपाल, म.प्र.



● अमन कपूर, दूसरी, समालखा, हरियाणा



चक्रमर्क

पंजीयन क्रमांक S0309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2001

सुरेश नारा, चौथी, चाँदबड, भोपाल, म.प्र.
